आदिनाथाय नमः
सूरि आत्मकमल लब्धि सद्गुरुभ्यो नमः

मानवता

लेखक

पू. पं. श्री प्रवीणविजयजी गणिवर

सम्पादक

पू. मुनिराज श्री महिमाविजयजी महाराज

अनुवादक

रतन परमार

रा. भा. 'कोविद' तथा हिं. शिक्षक 'सनद'

वीर सं. २४८० मूल्य हिन्दी आवृत्ति
वि. सं. २०१० पठन पाठन प्रति २०००

प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान –
मेहता कान्तिलाल रायचंदभाई
मु. साणंद Sanand जिल्ला – अमदाबाद

दो आनकी टीकीट भेजनेपर पुस्तक
भेट मिलेगी।

शाह नागजी गमनाजी गामसरवाला
रविवार पेठ पूना २ की तरफसे सप्रेम भेट
हा– इमरान नागजी

मुद्रक
आ. गो. प. नन
राष्ट्रभाषा प्रिंटिंग प्रेस, लि
३६८ सदाशिव पेठ पुणे २

निवेदन

हम देख रहे हैं कि आज हमारे चारों ओर स्वार्थ, द्वेष, अनीति, जातीयता आदिका बाजार गर्म हो रहा रहा है। मानो उसका प्रधान हेतु अपना तथा अपने बंधुओंकी उन्नति भौतिक और आधिभौतिक करना, लेकिन आज तो इसके विपरीत मानव ही मानवका शत्रु बन समस्त विश्वका मानों संहार करने पर ही तुला हुआ है। एक दूसरेका गला घोटनेके साधन अधिकाधिक मात्रामें जुटाना ही उनके जीवनका ध्येय हेतु बना, दृष्टिगोचर हो रहा है। विश्व यह विनाश तथा संहारकी एक रंगभूमि मात्र बनके रह गया है। अब तक मानवने अपने कल्याणार्थ जो कुछ निधियाँ या तत्व समहित किये थे व सब एकके पश्चात् एक निष्फल होते दिखाई दे रहे हैं। प्रेम, सहानुभूति, त्याग, बंधुत्व आदि गुणोंका दुनियासे दिन ब दिन लोप होता जा रहा है। यही परिस्थिति यदि और कुछ दिन यों ही बनी रहेगी तो निश्चय ही मनुष्य और पशुमें कोई अंतर न रहेगा।

लेकिन भयानक अधःपातसे पतित होती मानव जातिको बचाया जा सकता है। वैसा देखा जाय तो

प्रत्येक मानव अपना तथा अन्यका हित कल्याण करना चाहता जरूर है, लेकिन उसमें रही असत् भावनाओंकी निशानियां उस निश्चयसे पीछेही हटाती रहती है। धार्मिक शारीरिक सुख व समाधानके लिए मानव आत्मेका सद्भावनाकी गहरी खाईमें गिरा देनेके लिए सदा तत्पर रहता है। किंतु आज तक धर्म संस्थापक तथा प्रचारकोंने मानव जातिका यह अधःपात रोकनेका सतत प्रयास किया है। जिसमें जैन धर्मके तत्व तथा संदेशोंका भी असाधारण स्थान है। आज जैन धर्म आज भी अपने संस्थापक युगादिदेव श्री ऋषभदेव के बहुमूल्य संदेश तथा सदुपदेशक प्रभावसे मानव जातिका उद्धार करानेमें पूर्णरूपसे सहाय्यभूत बन सकता है।

जैन-साहित्य अब तक बहुतांशसे गुजरातीमें प्रकाशित होने पाया है। वह हिंदीमें, अधिक मात्रामें प्रकाशित होनेसे भारत भरकी असंख्य जनता तक पहुँच सकेगा। इस उद्देश्य वश ही 'मानवता' को हिन्दी पोशाकमें सुसज्जित कर पाठकोंके समक्ष रखनेकी चेष्टा कर रहा हूँ।

'मानवता' यह प्रातः स्मरणीय, कवि कुल किरीट पूज्य आचार्य देव श्री विजय लब्धिसूरीश्वरजीके परम विनयी दक्षादक्ष शिष्य रत्न पूज्य पंन्यासप्रवर

श्री प्रवीण विनयजी द्वारा गुजराती भाषामें लिखित 'अंतरनों अजवाळो' के कुछ लखोंकी झलक हैं। जिसका इसके पूर्व मराठी भाषामें भी यथार्थ अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। विद्वान् लेखककी कई अर्सेसे यह मनीषा थी कि कतिपय उपयोगी लेखोंका अनुवाद हर प्रांतीय भाषामें हो ताकि भिन्न प्रांतीय जन तथा अन्तर इसका मनन कर अपने दूषित जीवनमें उतारें, सद्योगसे पाये मानव-जन्मको सफल बनावें। हिंदी भाषामें अनुवाद करानेकी इच्छा कई सज्जनोंने पूज्यश्रीके समक्ष प्रकट की। लेकिन अनुवाद करनेका सुअवसर मुझे मिला, जिसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ।

इसका सुसंपादन पूज्य मुनिराज श्री महिमा विनयजीने किया है, जो स्वयं विद्वान् लेखकश्रीके विनयी शिष्य हैं। इनके संपादन-योग्यताका पता तो पाठकको उस समय लगेगा जब वह 'मानवता' का आदिसे अंततक पढेगा।

इस पुस्तकके लिये महाराष्ट्रके सुप्रसिद्ध साहित्यिक इतिहास तथा शिक्षण तज्ञ माननीय श्री दत्तो वामन पोतदारजीने अपनी बहुमूल्य संमति देकर जो सहानुभूति प्रकट की है, उसके लिये मैं उनका अत्यंत ऋणी हूँ।

भूमिका लिखनेके लिए ... जैन सिद्धान्त ... आदरणीय श्री कामताप्रसादजी जैनने अपना व्यस्त कार्यक्रममें ... भी ... प्रति जो अनुग्रह दिखा मुझे प्रकाशित पर आगे कुछ करनेके लिए प्रोत्साहित किया है। इसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

इसके अलावा मेरे मित्र श्री ... परमारने अनुवादमें रहे ... तथा भाषाविषयक दोष सुधारनेमें योग देकर इसको यथार्थ सुन्दर रूप देनेमें बड़ी मदद की है।

ठीक वैसे ही पूज्य श्री दीपचंद मातानाजी का भी अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने समय समय पर अनुवाद करनेकी प्रेरणा प्रदान की। साथ ही नरेंद्र त्रिवेदी तथा रघु कापडियाका भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने हर समय साथ दिया।

२११ रविवार पेठ, पूना २
दिसम्बर १९५३ — रंजन परमार

❀ अभिनंदन ❀

श्री माणिकचंद चनालाल राताजी मत्था
—पूना कैंप

श्री ताराचंद कपूरचंद रामसनवाला
घताळ पेठ पूना २

श्री एम. ब्रदर्स
भवानी पेठ, पूना २

श्री भूतमल लीलाचंद काल्यावाला
२११ रविवार पेठ, पूना २

श्री नाराजी गमनाजी रामसनवाला
रविवार पेठ, पूना २

जिन्होंने दर्शनाचार्य प. पू. म. श्री प्रबोध विजयजी द्वारा गुजराती में लिखित 'अंतरना अजवाळा' के चुने हुए लेखों का हिन्दी भाषा में 'मानवता' रूप दर्शन में पू. मुनिश्री महिमाविजयजी की प्रेरणा से आर्थिक सहायता प्रदान की।

रंजन परमार

जैन धर्मियों के लिए 'मानवता' यह पोथी विचार अवश्य उत्पादक प्रतीत होगी। किंतु अजैनियों के लिए तो इसमें प्रतिपादित सिद्धान्त विचारणीय और मननीय होंगे। क्योंकि सब सद्धर्मों का मुख्य सिद्धान्त सत्यप्रेम पर ही निर्धारित रहता है।

कार्तिक वद्य ७।१२।७५ } दत्ता वामन पोतदार
पुणे

कर-कमलोंमें



विद्याधनत्री सरस्वती जिनकी जिव्हापर निश
दिन निवास करती है और वक्तृत्वशक्ति जिनकी
चेरी है।



जो विश्वकी ऋद्धि सिद्धियोंसे पर निर्ग्रन्थ ज्ञात पुत्रके संदेशसे अखिल विश्वमें मानवता का प्रचार करनेका अहर्निश कार्य करते रहते हैं।

ऐसे

व्याकरण, काव्य, कोश, षड्दर्शन, न्याय, ज्योतिष शास्त्रके मर्मज्ञ पूज्य आचार्यदेवेश

श्री विजय लब्धिसूरीश्वरजी महाराज

—के करकमलोंमें शतश अनुवदना सहित 'मानवता' सादर समर्पण।

विनीत

रतन परमार

भूमिका

मानवताके लिये भी मानवकी भूमिकाकी
आवश्यकता होगी यह मैंने कभी सोचा भी न था।
किन्तु भाओी रंजन परमारने यह माँग की कि मैं
मानवताकी भूमिका लिख दूँ। जरा विलंब हुआ तो
अुन्होंने तारसे स्वीकृति पा ली। यह सब कुछ ठीक
हुआ, पर मैं स्वयं असमंजसमें हूँ कि मानवताकी
भूमिका ही क्या लिखूँ? वह तो मानवकी अपनी चीज
है— मानवका स्वभाव है और अुसकी शक्ति भी।
जहाँ पशुबल असफल होता है वहाँ मानवता सफल
होती है परन्तु आजका मानव तो अपनेको ही भूला
हुआ है— वह मानवताको क्या जाने? वह मशीन
युगका प्राणी है— भौतिकवादका पुजारी है। अुसने
बेतहाशा आगे दौड़ना सीखा है। रुककर सोचने समझने
का अुसे अवसर नहीं है। वह नहीं पहचानता कि
अुसके भौतिक रूपमें वह न कुछ है, क्योंकि वह मांस-
मज्जा हड्डी-त्वचाका चलता फिरता पुतला मात्र

नहीं है। अगर चेतनता और गजाग्रता शरीरका रूपा नहीं है। आत्म-ज्योतिका जागति अन्दर भीतर स्थित मानव-देवताको देन है। यह चेतना है और ज्ञान शक्ति और गुणका आगर है। बाहर नहीं अन्दर भीतर सब कुछ मौजूद है। यह बहिर्मुखता चलना छोड़ दे और (तारक मानवको– सदा शाश्वत ग्रहणार्थ मानवको पहचाने तो वह जीवनमें सफल होकर शाश्वत शांति सिद्ध करेगा। भौतिकताके भवन या बाह्य देशवासियोंने मानवताकी अवहेलना की– दानवताके ये बड़े-बड़े महायुद्धोंने उनका बुद्धि ठिकाने लगा दी। ये भी अब मानवताकी ओर आकृष्ट हो रहे हैं। भारत सदासे मानवताका हामी रहा है। जैन आचार्यों और साधुओंने लोकके कोने-कोनेमें मानवताका शासन किया है। जिस युगमें भी जैन साधु जागरूक हैं और वे लोकको मानवताका पाठ पढ़ा रहे हैं। आज भारतका मानव बहक रहा है। वह प्राचीन ज्ञान-ज्योतिको प्राप्त करके भौतिक-चकाचौंधमें देख नहीं पा रहा है। ऐसे अवसरपर मानवताके प्रचारके लिए जो भी प्रयत्न किया जाये, वह स्तुत्य है।

भाजी रजनका यह स प्रयास इसी दिशामें अग्रेत कदम है। उन्होंने जैन धर्मके ज्ञानकणोंको ठीक समझा और विकसित किया है। साथ ही विज्ञान लेखक पुष्पयास जो प्रमाण विज्ञानके विभागोंको नक्षत्र

करते समय योग्य न्याय किया है। मान्यताके मोतियोंको राष्ट्रभाषाके सुदृढ़ धागमें पिरोकर अद्वितीय अक्षय कीर्ति काम किया है। उनका मेरा अभिनंदन। लोक मानवताको समस्त यही मेरी कामना है।

कामताप्रसाद जैन
अध्यक्ष, अखिल विश्व जैन मिशन
अलिगंज–एटा

स्व महात्मा गांधी

आज श्रीमहावीर स्वामीजीका जो सम्मान किया जाता है यह उन्हीं कारणसे। अहिंसा धर्मका महान जो प्रचार और प्रसार किया यही वह है, इसके बारेमें मुझे संदेह नहीं है। अहिंसा तत्त्वके मर्मके बड़े प्रचारक महावीर स्वामी हो गए।

सर्वं मगठ मांगल्यम्
सर्वं कल्याण कारणम्
प्रधान मम धर्माणम्
जैनम् जयति शासनम्



चत्तारि सरण पवज्जामि,
अरिहंते सरण पवज्जामि
सिद्ध सरण पवज्जामि,
साहू सरण पवज्जामि,
चपली पन्नत्त धम्म सरणं पवज्जामि।

मानवता

— मानव जन्म यानि —

१ मानव जन्म यानि-मुक्ति-नगरीमें प्रविष्ट होनेका मुख्य प्रवेश द्वार।

२ मानव जन्म यानि-जन्म जरा व मृत्युकी हिफाजतपूर्वक ऑपरेशन करनेवाला एक दिव्य डिस्पन्सरी (अस्पताल)।

३ मानव जन्म यानि-धर्मका बड़े पैमानेपर व्यापार करनेवाला एक भव्य बन्दरगाह।

४ मानव जन्म यानि—जीव-अजीव नवतत्व छ द्रव्य आदि अगाध तत्वज्ञानकी शिक्षा देने वाला एक महान् महाविद्यालय (कॉलेज)।



५ मानव जन्म यानि—मोहराजाद्वारा कब्जे में ली, अगाध, अगणित धनराशिको, कानूनके-अनुसार न्यायालयमें लड़,पुन प्राप्त कर देनवाला एक निर्भय, निडर कानूनतज्ञ (बेरिस्टर)।



६ मानव जन्म यानि—अगणित दिव्य वैभव व यश आरामके पूर्णाधिकारी देव-मानवोंद्वारा बार बार इच्छित, एक अपूर्व वस्तु।



७ मानव जन्म यानि—अपार अपरम्पार भव सागरसे तिरानेवाली एक महान्-मजबूत स्टीमर।



८ मानव जन्म यानि—शाश्वत (Permanent)

शांति देनेवाली एक अद्भुत संस्था शान्ति निकेतन ।



९ मानव जन्म यानि–आत्मामें रहे विज्ञानके सच्चे रूप व अपूर्व निधीको प्रगट करनेवाला एक ईमानदार वैज्ञानिक ।



१० मानव जन्म यानि–हमसे असंख्य योजन दुरस्थित शिवपूरिको एक ही क्षणमें पहुँचानेवाला अजीब शक्तिशाली वायुयान ।



११ मानव जन्म यानि–अज्ञान–तिमिर में ज्ञान ज्योतका प्रकाश फेंकनेवाला सर्वश्रेष्ठ ऊँचे पॉवरका ग्लोब



१२ मानव जन्म यानि आधि, व्याधि, उपाधि आदि त्रिविधाग्निमें दग्ध आत्माओंको

अपने शीतल स्निग्ध जलसे शीतल करनेवाला एक झरना ।



१३ मानव जन्म यानि-आम मैदानमें सबके समक्ष मोहरूपी शक्तिशाली सुरतीमानको पराजित करनेवाला एक सुविख्यात मह्न ।



१४ मानव जन्म यानि-लोहे जैसी बनी आत्माका कुंदन सम बनानेवाला एक जादूगर ।



१५ मानव जन्म यानि-छोटे बडे जगतमात्रके समस्त प्राणी वर्गके संरक्षणका बीडा उठानेका अपूर्व साहस दिखानेका सुंदर सुयोग्य धाम ।



१६ मानव जन्म यानि-जिन पूजा-गुरुसेवा-जात्या-सुपात्रदान -गुणानुराग -आगमशास्त्र-

श्रवण पठनादि छ विविध फलोंको देनेवाला एक परोपकारी अद्भुत वृक्ष ।

१७ मानव जन्म यानि–दर्शन (सम्यक्त्व) ज्ञान चारित्रादि ये तीन अमूल्य रत्न–राजोंका सुंदर आवासस्थान एक बडा थाल ।

१८ मानव जन्म यानि–सभी मनकामनाओंको पूर्ण करनेवाला साधन–एक अपूर्व चिंतामणी रत्न ।

१९ मानव जन्म यानि–आत्माके मोक्षप्राप्ति जन्मसिद्ध हकको दिलानेवाला एक अमूल्य अवसर ।

-- याद रखो --

याद रखो-दुनियाभरकी ऋद्धि व सिद्धियाँ मिलना प्राय सुलभ है लेकिन वीतरागधर्म युत मानव देह पुन मिलना अत्यन्त दुर्लभ है ।

× × ×

याद रखो-आगे अथवा पीछे सबको यमराजके घर जाना तो है ही अत मृत्युसे न डरते, पापोंसे डरना सीखो ।

× × ×

याद रखो-कालाबाजार, लांच-रिश्वत अथवा लूट पाटसे एकत्रित की संपत्ति, तुम्हारी मृत्युके पश्चात् कभी साथ न आयेगी, बल्कि उससे उपार्जित भयंकर पाप तुम्हारे साथ आ, तरह तरहकी यातनाएँ दें, तुम्हें छठीका दूध याद करायेंगे ।

× × ×

याद रखो–अपने सगे सबधियोके लिए तुम धर्मको विस्मरण कर आत्माका सत्यानाश कर रहे हो, लेकिन तुम्हारा सत्यानाश होते ही वे लोग फिरके कभी तुम्हारा मुँह न देखेंगे।

× × ×

याद रखो–अहिंसा सयम और तपकी सच्ची व्याख्याके ज्ञान व उसके ठीक तरहसे पालन सिवाय विश्वमें शांति-साम्राज्यकी स्थापना होना प्राय असभव है।

× × ×

याद रखो—जो आत्माएँ धर्मका सवस्व और सदाकाल रक्षण करती हैं,धर्म स्वय उनका सरक्षण करता ही है।

× × ×

याद रखो—जो देश अथवा शासन-तत्र [सल्तनत]पतित पावन करनेवाली धर्म सी अमूल्य निधीको सम्हालती नहीं उपेक्षा करती है वह स्वय अपने पतनको निमत्रण दे रही है—यह सैद्धांतिक सत्य है।

+ + +

याद रखो जगतके प्रत्येक प्राणि-मात्रको अपनी जिंदगी प्यारी है, अतः किसी प्राणिकी जिन्दगी खत्म-समाप्त करनेका अधिकार किसीको नहीं।

× + +

याद रखो-मिथ्याभिमानमें अपनी औकात को भूल अगर देव गुरुके समक्ष मस्तक न झुकाओगे तो समय आनेपर विषय लंपट व अपढ अज्ञानी आत्माओंके सामने सिर नमाना पड़ेगा।

+ × ×

याद रखो— इस मायावी जगतमें व्याप्त सभी दुखोंको दूर करनेकी रामबाण औषधि एक प्रभु भक्ति है। जिनके जीवनमें इसका स्थान नहीं, वह जीवन पशु-जीवन ही है।

+ + ×

याद रखो-तुम्हारा जो कुछ भला बुरा होता है—वह सब शुभ अशुभ कर्मोंका पूर्ण आभारी है और उसीकी वजहसे सब होता है। अन्य कारण मात्र हैं।

× + ×

याद रखो— बन्दर डुक्कर और टिड्डी आदि मूक प्राणियोंके जीवनके बदले सिर्फ मानव जातिकी रक्षा करनेका सिद्धांत निहायत सकुचित, तुच्छ, दयाहीन और अज्ञानी मस्तिष्ककी उपज हो, मुझ जनाके लिये कतअी स्वागतार्ह नहीं है।

× × ×

याद रखो—राग और द्वेषके सिवाय अिस जगमें तुम्हारा अन्य कोअी शत्रु है ही नहीं। बल्कि अन्योंमें शत्रुत्वकी कल्पनाके कल्पक (करने वाले) "नमो अरिहंताण" अिस महान् पदकी वास्तविक व्याख्याको समझे ही नहीं।

× × ×

याद रखो—आपकी सद्गतिका आधार दुनिया के नमस्कार वदन विधि, मान-पान झूठी आन शान अथवा श्मशान यात्रामें उपस्थित विशाल मेदिनी आदिपर नहीं रहता—लेकिन उसका मुख्य आधार तो तुमने अपने सारे जीवनमें रखे सदाचार पर पूर्णरूपेण अवलंबित है।

× × ×

याद रखो—असे लोककी शासन पद्धति, सत्ता-यत्रके कायदे-कानूनोंको तुम चाहो तो घोलके पी सकोगे लेकिन धर्म-सत्ताद्वारा जारी किये कानूनोंके अधीन हुए बिना दूसरा कोओ मार्ग नहीं—

× × ×

याद रखो—जो विवेक-व्यवहार तुम्हें पसद नहीं आता वही व्यवहार गर तुम दूसरोंके साथ करते हो–तब तुम न्यायान्यायको तोलनेमें मुख्य सहायक अैसी अपनी तीव्र बुद्धिका सरे आम नीलाम कर रहे हो।

× × ×

याद रखो—आशा-दासीके जो दास हैं—वे तो समस्त ससारके दास हैं। लेकिन जिसने आशा-दासीको अपनी दासी बना दी है, सारी दुनिया उसकी दास है।

× × ×

याद रखो—तुम जिसे विपत्ति मानते हो वह, विपत्ति नहीं ठीक वैसे ही सपत्ति–भी सपत्ति नहीं। बल्कि देवाधिदेव वीतराग परमात्माका विस्मरण

यही जीवनकी सच्ची विपत्ति और स्मरण यही सच्ची संपत्ति है।

× × ×

याद रखो —आशा अनंत है और आयु मर्यादित (परिमित) है। आशाका खड्डा कभी भरता नहीं। अतः अपनी मर्यादित आयुद्वारा संसारको मर्यादित बनानेका प्रयत्न कर लो।

× × ×

याद रखो—आप अन्य लोगोंको बड़े-बड़े उपदेश देनेमें अच्छे पंडित हो और उपदेश देनेकी प्रति-पल चिंता किया करते हो उतनी ही सावधानी उस उपदेशानुसार अपने जीवनको बनानेमें रखो तो सद्गतिकी ओर कहीं दूर नहीं बल्कि अपनी ही मुट्ठीमें है।

× × ×

याद रखो—जिस विषयमें तुम स्वयं निष्णात (सज्ञ Expert) न हो, उसके बारेमें तुम्हारी सलाह बिलकुल निरुपयोगी होनेसे भूल करके भी ऐसी

बातमें नाहक अपनी टांग मत अड़ाओ।

× × ×

याद रखो—पूर्वभवमें उपार्जित पुण्य-कर्मोंका प्रभाव जब तक कायम है तब तक तुम्हारे सहस्रों तो क्या लाखों अपराधोंकी भी क्षमा मिलेगी। लेकिन पुण्यप्रभावके नामशेष हो पापोदय होने पर और सभी अपराधोंकी कलई खुल जाने पर तुम्हारे जीवनमें भडकता दुःख दावानल तुम्हें जलाकर भस्मीभूत कर देगा।

× × ×

याद रखो—असार संसारमें सच्चे सुखकी खोज करनेका प्रयत्न—यह तो पानी मथके मक्खन निकालनेकी मर्नीषा रखनेके समान अज्ञान चेष्टाके सिवाय दूसरा कुछ नहीं।

× × ×

याद रखो—पाप समाहित करते समय तुम्हारी झूठी प्रशंसा कर पीठ सहलाने (थपथपाने) वाले जग जगमें बहुत मिलेंगे। लेकिन जब तुम्हारी

पीठपर लाठियोंकी बारिश होंगी तब बचानेवाला ढूंढे भी कोई न मिलेगा ।

+ + +

याद रखो—तुम्हारा पुण्य-प्रदीप जब तक जगमगाता है तब तक सब तुम्हारे अनुकूल तथा साथी बने रहेंगे, लेकिन जब प्रदीप बुझ जायेगा और सर्वत्र अन्धकार फैल जायगा तब मित्र और साथी सबही भी शत्रुका काम करेंगे ।

× × ×

याद रखो—देवश्रेष्ठ-जग सार्थवाह प्रभु जिनेश्वरके मंदिर व उपाश्रय ये जन्म मरणकी शस्त्र क्रिया (Operation) करनेवाले बड़े अस्पताल और जीवादि तत्वका अपूर्वज्ञान देनेवाले भव्य महाविद्यालय (College) हैं । इन दोनों उपयुक्त संस्थाओंका नाश चाहनेवाले, अपना सत्यानाश, साथ ही साथ असख्य आत्माओंके हित पर कुठाराघात करनेवाले हैं ।

+ + +

याद रखो—देवोंद्वारा उपभोगित अनन्तकाल तकके प्रचुर दैवी सुखोंका भी एक दिन अन्त

होता है, तो फिर अनुत्तरके सिरोंपर गिनने जितने मानव मात्रके तुच्छ क्षणभंगुर सुखको अंत होते कौन सी देर लगनेवाली है? अतः अशाश्वत सुखोंके पीछे पागल न बन, शाश्वत सुखकी प्राप्ति हेतु प्रयास करो।

\+ + +

याद रखो—मैं और मेरी माया और अहमकी मारामारी जबतक जीवनसे जड़मूल उखड़ न जायेगी, तबतक चौराशी लाख भव यानिमें फेरे कभी न कटेंगे।

\+ + +

याद रखो—धनत्रयोदशीके शुभदिन गर धन की पूजा करनेसे धनवान बन सकते, तो दीन दरीद्री कौन रहें। लेकिन वीतराग देवकी श्रद्धा-पूर्वक पूजा अर्चना करनेसे सब कुछ बिना माँगे मिल जायगा।

× × ×

याद रखो—सत्ताकी निरांकुश शक्ति प्राप्तकर विश्वमें शांति-शांतिका वातावरण सजनेमें भले

ही तुम सफलता प्राप्त कर लोगे। लेकिन आने वाले भवमें कर्म-सत्ताका, क्रूर पंजा भी तुम्हें त्राहि त्राहि करानेमें कमी न करेगा।

× × ×

याद रखो—जबतक झूठी तृष्णाका अंत न आयेगा, तबतक तुम्हारी दरिद्रताका भी जीवनमें कभी अंत आनेवाला नहीं।

× × ×

याद रखो—जिंदगीकी अंतिम श्वास [साँस] तक किसीकी कैसी भी योग्य रीतिसे सेवा सुश्रुषा तुम भले करोगे लेकिन जबतक देव-गुरु धर्म नामक इस महान त्रिपुटी विभूतियोंकी सेवा न करोगे तबतक मोक्ष रूप मीठा मेवा तुम्हें हस्तगत होना प्रायः मुश्किल है।।

उससे तुझे क्या ?

हे चेतन ! सारी दुनियाके प्राणी भले तुझे झुक झुक कर प्रतिदिन सौ बार नमस्कार करते हों, उससे तुझे क्या लेना देना ? तेरी जीवन-नौकाके सरक्षणका मुख्य आधार-नमस्कार अथवा वदन नहीं बल्कि तेरे सदाचार व सुस्वभाव पर अवलंबित हैं।

+ + +

हे चेतन ! लाखों-करोड़ोंकी अगणित संपत्ति तेरे पास होनेसे तुझे क्या लाभ ? मृत्युसमय तेरे साथ तो तूने अपने हाथसे सद्व्यय किया द्रव्य ही आयेगा।

+ + +

हे चेतन ! टेबलपर ज़ोर-ज़ोरसे मुक्के व रंगमंचपर बार बार ठोकर लगा अपने विभिन्न अभिनय द्वारा किसी भी किसमके नास्तिकोंकी

सालियासे मार व्यामको ग्रैनानवाला भले तू अगर पत्ता क्यों न हो? लेकिन तेरा आत्मकल्याण तो दयाधिन्द्र निग्रन्थ वीतराग भगवानकी आज्ञानुसार जीवन व्यतीत करनेसे ही होगा।

\+ + +

हे चेतन! तू कमा भी, जितना भी उच्च दर्जेका सत्ताधिकारी क्यों न हो—उससे तुझे क्या? तेरे मस्तकपर रात दिन लटकती स्वमसत्तारूपी तलवारका नाश तो धर्म-सत्ताकी शरणमें जानेसे ही होगा।

\+ + +

हे चेतन! भले ही तेरी मृत्युके पश्चात् सारे शहरके-बाजार बंद रहे, उससे तुझे क्या? तेरे जीवनमें रात दिन चल रहे अधम बाजारको हमेशाके लिये नष्ट न किया जायगा तब तक तेरी दुर्गतिके द्वार बंद होने प्राय: बहुत ही मुश्किल हैं।

× × ×

हे चेतन ! तेरे मनोहर-रमणीय-भव्य प्रासादमें स्वर्ग स्थित रतिरानीकी सहेलियाँ रूपयौवना अप्सराओंको भी नीचा दिखावे ऐसी यौवनकी बहार लूटती सुंदर कमनीय कामिनियोंका जमघट क्यों न हो, उससे तुझे क्या ? सिर्फ एक ही शिवसुंदरीके साथ शादी किये बिना तुझे सच्ची आत्म-शांति कभी अपने जीवनमें प्राप्त न होगी।

\+ × +

हे चेतन ! रूवाबदार, ऊँचे कद, चौड़े सीने और मजबूत बाँधेवाली सशक्त देहसे भले ही तू सारी पृथ्वीको अपने एक प्रहारसे कम्पा सकता हो ! लेकिन तेरी सच्ची बहादुरी, वीरता, और शौर्य तो अभ्यंतर शत्रुको थरथर कपानेमें ही है।

\+ + +

हे चेतन ! अखिल विश्वकी समस्त भाषा व शास्त्रपर भले तेरा संपूर्ण काबू हो, उससे तुझे क्या ? तेरा आत्मकल्याण तो पंचेन्द्रियोंपर पूर्ण रूपसे काबू पाने पर ही होगा।

× × ×

हे चेतन! जिस मायावी जगमें लाखों करोडों की सरयाम तेरे अनुयायी व साथी क्या न हो ? उससे तुझे क्या! जब तू स्वयं धर्मका सच्चा अनुयायी बनेगा तभी तेरा खैर है।

× × ×

हे चेतन! सारी दुनिया तुझसे अच्छी तरह भले परिचित हो, उससे तुझे क्या? तेरी आत्म सिद्धि तो सुदेव, सुगुरु और सुधर्म इन तीनोंसे परिचित होनेपर ही होगी।

× + ×

हे चेतन! तेरी जान पहचान विश्वकी सुप्रसिद्ध विभूतियोंसे भलेही क्यों न हो, उससे तुझे क्या? लेकिन समस्त ऋद्धी व सिद्धियाँ तो तभी हस्तगत होगी जब तू अपनी आत्माको पहचानेगा।

× × ×

हे चेतन! तुझे दुनियाभरकी सब उपाधियाँ क्यों न प्राप्त हो गयीं हो, उससे तुझे क्या? तेरी सब मायावी उपाधियोंका अंत तभी होगा जब तुझे सत्य धर्मकी प्राप्ति होगी।

× × ×

हे चेतन ! तेरी स्मशान यात्रामें भलेही लाखों-की तादाद्में भीड़ एकत्रित हो, उससे तुझे क्या ! परलोकमें तो तुझे अकेलेही जाना है और यहांके सुख दुःखोंका उपभोग भी तुझे अकेले ही करना है।

× × ×

हे चेतन ! भलेही तू बहत्तर कलाओंका कला-निधि हो उससे तुझे क्या ? विना धर्म कलाके माहिर हुए इस दुनियामें तेरी मुक्ति न होगी।

+ + +

हे चेतन ! तेरी प्रतिमाकी अनावरण विधा भले हो बडे बडे शहरोंमें जगत विख्यात व्यक्तियोंके हाथोंसे हो, उससे तुझे क्या ? जबतक तू अपनी आत्मापर रहे अष्टकर्मावरणको दूर न करेगा तबतक तुम्हें—जन्ममरण के झूलेमें अनिच्छावश भी झूलना ही पडेगा।

उसी दिनको धन्य-दिन समझना

राग और द्वेष नामक आत्माके दो महान् शत्रुओंके जीतना देवाधिदेव प्रभु जिनेश्वरको ही अपना माननेकी गवाही [साक्षी] जब तुम्हारी आत्मा दे, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

× + ×

अहिंसा सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रहादि पंचमहाव्रतधारी तथा रात्रि भोजन त्यागी गुरुदेव को ही जब तुम्हारी आत्मा गुरुके तौरपर स्वीकार, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

× × ×

छोटे अथवा बड़े, सदोष या निर्दोष प्राणिपर दया करनेकी निरन्तर डिंडिमका घोष करनेवाले प्रभु वीतराग कथित धर्मको ही सच्चा धर्म मानने

की प्रतिष्ठा जब तुम्हारी आत्मा पर हो, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

× × ×

त्रिलोकाधिपति जगनायक दशार्थदेव श्री जिनेश्वरदेवका दर्शनमात्रसे नैन तथा पूजन अर्चना किसे हाथ जिस दिन पवित्र बनें, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

× × ×

श्रमणत्व [साधु वृत्ति] की उच्च उपाधिसे विभूषित करने तथा समता अथवा सच्चा ज्ञान देनेवाला ऐसी उत्तम धार्मिक क्रिया सामयिक जिस दिन तुम करो, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

+ + +

स्व उत्कर्ष [खुदकी बड़ाई] और अन्यका अपकर्ष [बुराई] करनेकी अधम प्रवृत्तिको जिस दिन तुम्हारी आत्मा तिलाञ्जली दे, जड़मूलसे नष्ट कर दे, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

+ × +

सब पापोंमें अग्रणीपद प्राप्त मिथ्यात्व नामक पाप-वृत्तिको जिस दिन तुम अपने जीवनसे सदाके लिए बिदा कर दो, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

× + ×

मोह-मायादि नीरसे लबालब संसार कूपमें गलेतक डूबे प्राणि मात्रको डूबनेसे बचा, बाहर खींचनेवाला प्रभु वीतरागकी मृदुवाणी जिस दिन कर्णगोचर हो, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

+ × +

सब दानोंमें श्रेष्ठ ऐसा सुपात्र दान देनेका जब शुभावसर तुम्हें प्राप्त हो, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

× × ×

पंचेंद्रिय विषयोंकी दास यह आत्मा, जिस दिन उन इन्द्रियोंको अपनी दासी बनावे, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

× × ×

रात अनन्त मन्दिरोंमें दुराचारकी दुर्गन्धमय गहरी खाईमें स्नान करती आत्मा जिस दिन सदाचार रूपी निर्मल स्रोतमें स्नान करे, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

× × ×

रात और दिन अहर्निश सबका बुरा करनेकी दुष्ट भावना रूपी विषसे दुष्टकी तरह सिर खपाने वाली आत्मा जिस दिन दुश्मनकी भलाई करनेकी वृत्ति धारण करे, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

✓

हाट, हवेली, रामा, हेम, हीरा, मोती माणिक, बाग बगीचे, कंचन कामिनी, सत्ता-मदादि क्षणभंगुर पदार्थोंके पीछे दीवाना बन दरदर भटकनेवाला आत्मा जिस दिन अविनश्वर-धर्मके पीछे दीवाना बनेगी, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

+ + +

समस्त ससारके त्यागार्थ असमर्थ अशक्त बनी तुम्हारी आत्मा निस दिन बारह व्रतोंको धारण करेगा उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

५

छ खंडके अधिपति चक्रवर्ती भरत राजा महाराजाओंके मुकुट मणि राजर्षि प्रसन्नचद्र और महान चूडामणि नररत्न शेठ शालीभद्र आदिद्वारा स्वीकारित चारित्र धर्मको जिस दिन तुम्हारी आत्मा धारण करेगा, उसी दिनको जीवनका धन्य दिन समझना।

६

अष्ट कर्मावरणका छेदन, जन्म मरणका हरण जिस दिन तुम्हारी आत्मा शिवनगरीकी ओर प्रस्थान करेगी उसी दिनको जीवनका सर्वोदय दिन समझना

उस समय तू क्या करेगा ?

हे चेतन ! अभी तो तू पूर्व भवमें उपार्जित पुण्यके प्रभावसे परलोककी चिंता, दुःखका भूल, खूब ऐशोआराममें जिंदगी बसर कर रहा है— खुशियाँ मना रहा है। लेकिन इस भवमें अगर तू कुछ भी पुण्योपार्जन न करेगा तो जब परभवमें दुःखी होनेका समय आएगा, उस समय तू क्या करेगा ?

•

हे चेतन ! तू क्षुधित कैसे रह सकेगा ऐसा चिंतावश जब कभी तपश्चर्याकी बात आती है तब उसे टाल देता है। लेकिन पापोदय होनेपर क्षुधित रहनेका प्रसंग जब कभी तेरे जीवनमें आयगा, उस समय तू क्या करेगा ?

• •

हे चेतन ! फिलहाल तो तेरा मिनार समय

पर गरमागरम [तानी] रसोई उपलब्ध न होनेपर गुस्सा आसमानपर चढ जाता है, लेकिन दरिद्रावस्थाका आगमन होते ठंडी रसोईके भी फाके पडेंगे, उस समय तू क्या करेगा?

हे चेतन! गर्मीके दिनोंमें सूर्यनारायण द्वारा वसुन्धरा पर छोडे अग्नि बाणोंकी वजहसे गरम बना सम्र जल न भानेपर उसमें तू बर्फ [Ice] डाल ठंडा बनाता है लेकिन पशु-पक्षीके तिर्यंच भवमें गंदा, जूठा, मैला, व दुर्गंध मय जल-पान करनेकी वेला आएगा, उस समय तू क्या करेगा!

हे चेतन! अभी तो तू संपत्ति गर्वमें भूल अक्कड बना किसी अन्यके सामने एक क्षण भी देखना पसंद नहीं करता लेकिन संपत्ति ह्रास होने परजब नीच मनुष्योंके मुखमें ताकने व आठ आठ आँसू बहानेका समय आयगा उस समय तू क्या करेगा!

हे चेतन! अभी तो तू अपनेको प्राप्त सत्ताके बलसे सभीको डराने धमकाने व सतानेमें ही जिंदगी का मजा मानता है, लेकिन सत्ताकी डोर टूटते ही नव घोर भयानक सजा सहनेका प्रसंग आएगा उस समय तू क्या करेगा ?

हे चेतन ! अभी तो तुझे रूईके तीन मणके बड़े गद्दे बिना सुखकी नींद भी नहीं आती, लेकिन धर्म विहीन जीवनके प्रभावसे नरकमें कृटशाथपर सोनेका मौका आयेगा, उस समय तू क्या करेगा ?

हे चेतन ! अभी तो तुम सर्दी-गर्मी-क्षुधा तृषा तृष्णा और बगैरह सामान्य कोटिके दुःखसे भी त्रस्त हो। समर्थ होनेपर भी धर्मकार्य नहीं करते । लेकिन धर्मविहीन बने तुम्हें जब नरककी बेशुमार अनन्त यातनाऐं सहन करने का प्रसंग आयेगा, उस समय तू क्या करेगा ?

हे चेतन! फिलहाल तो तुझे परोपकारार्थ एक पाई भी खर्च करनेमें विषमज्वर चढ़ जाता है, लेकिन चोर-लुटेरे और डाकुओंके पंजेमें फँसने पर जब वे तुझे भिखारी बना देंगे—उस समय तू क्या करेगा?

७

हे चेतन! अभी तो तू जिह्वाके क्षणिक स्वादार्थ कन्दमूलादि अभक्ष्य पदार्थोंका भक्षण करते समय जीवदयाका जरा भी विचार नहीं करता, लेकिन पशु जीवनमें घास फूस खानेकी बारी आवेगी—उस समय तू क्या करेगा!

८

हे चेतन! अभी तो किसी जीव मात्रकी सेवा सुश्रुषा करना तेरे जी पर आता है, लेकिन भवचक्रमें भैंसे बन कर रूमे भरी गाड़ियाँ अथवा पानीकी मशक खींचनी पड़ेगी—उस समय तू क्या करेगा?

९

हे चेतन ! फिलहाल तो तू मिथ्याभिमानमें भूला, अक्कडवृत्ति अगिकारकर सीना तानके सभीको तुच्छ समझता सरेबाजार चलता है। लेकिन वगालियतके गले लगते ही ये सारी शेखियाँ एक ओर रख,नीच मनुष्यको भी सलाम करनेकी बारी आएगी-उस समय तू क्या करेगा?



हे चेतन ! जब तू निरोगी है, तब शक्य होनेपर भी धर्म कार्यमें दिल नहीं लगाता। लेकिन जब चारों ओरसे रोग शोक दुखादि शत्रु तुझे घेर लेंगे और तू बिलकुल असमर्थ अशक्त बन जाएगा-तब तू क्या करेगा?



सच्ची क्रांति

सुदेव, सुगुरु तथा सुधर्मसे अपरिचित जीवनको अिन तत्वत्रयीमे परिचित कर, रात दिन उसको ही सेवामें तत्पर बनाना-यही जीवनकी सच्ची क्रांति है।



सम्यग् दर्शन [True faith] सम्यग्ज्ञान [True Knowledge] और सम्यग् चारित्र [True Conduct] इस रत्नत्रयीसे रिक्त जीवन मंजुषाको मुंहतक भर लेना यही जीवनकी सच्ची क्रांति है।



हिंसा पिशाचीनीके पूर्ण रूपेण वशमें रहे जीवनको अहिंसा देवीका अनन्य भक्त बना कर उसे सफल करना यही जीवनकी सच्ची क्रांति है।



पदम-कम्मपर झूठ बोलनकी बुरी आदतमें
व्यथ व्यतीत होत जीवनको सत्यवादी बना उसे
सफल बनाना यही जीवनकी सच्ची प्राप्ति है।

परार्द वस्तुपर अनाधिकारपूर्ण सत्ता कर
उस बिना किसी शीरगुलके हजम करनेकी नीच
प्रवृत्तियों तष्ट करने जीवनको प्रामाणिकताका दीक्षा
दे आत्म संतोषी बनाना—यही जीवनकी सच्ची
प्राप्ति है।

दुराचारके दुर्गन्धमय गन्दमें रात दिन नीचक
तरह गोते लगानवाले जीवनको सदाचार रूपी
पवित्र गंगाके स्वच्छ शीतल नारमें स्नान करनेके
लिय उद्यत करना यही जीवनकी सच्ची प्राप्ति है

परिग्रहके महसे ग्रस्त बने जीवनको सतोष प
स मस्त बनाना—यही जीवनकी सच्ची प्राप्ति

राग द्वेषकी भट्टीमें रात दिन जल रहे जीवनक

समता नीरसे शांत करना यही जीवनकी सच्ची प्राप्ति है।



स्वस्तुति और परनिन्दाका गन्दा व्यापार करने वाली जीवन पत्नीको स्वनिंदा और पर प्रशंसाके व्यापारका रसिक बनाना, यही जीवनकी सच्ची प्राप्ति है।



अन्यका उत्कर्ष निहार मन ही मन जलनेवाले हरामी जीवनको किसीका भी उत्कर्ष निहार हर्षित होनेकी प्रवृत्ति प्रदान करना यही जीवनकी सच्ची प्राप्ति है।



अन्यके अवगुण निरीक्षणार्थ काक वृत्ति धारण कर रहे जीवनको गुणग्राही बना, हंस वृत्तिवाला बनाना—यही जीवनकी सच्ची प्राप्ति है।



अहं और ममकी रात दिन जापकर माया पिशाचिनी न मि व्याभिमानरूपी भयंकर अजगर के बाहि बन जीवनको नाहम् और न ममकी

सुमत्र सिखा उसके आलस छुडाना—यही जीवनकी सच्ची क्रांति है।

चतुर्गति रूप संसारमें परिभ्रमण कर रहे जीवनको पंचमहाव्रतोंके पालनद्वारा पंचमगतिमें पहुँचाना यही-जीवनकी सच्ची क्रांति है।

अनादि कालसे मोहवश बने जीवनको धर्मवंत बनाना यही जीवनकी सच्ची क्रांति है।

उपरोक्त 'सच्ची क्रांति' की वास्तविक व्याख्या समझे बिना भ्रांतिजनक क्रांतिके मोहमें फंसोगे तो प्राप्त की थोडी बहुत शांति भी जीवनसे विदा हो जाएगी।

सफलताकी सच्ची कूंजी

मानव जन्म (भव) की सफलता ऐशोआराम, नाच, कूद, हँसी मजाकमें नहीं, लेकिन त्याग धर्मकी शुद्ध आराधनामें है।

मानव देहकी सफलता सिर्फ उसे वस्त्र पुष्प बनावटी सौंदर्य प्रसाधनोंसे सजाने व अपटुडेट बने रहनेमें नहीं, लेकिन विविध प्रकारके व्रत नित्यानियम धारण करनेमें है।

धन संपत्तिकी सफलता उसे संग्रहित करनेमें नहीं, लेकिन जगह जगह उसका सद्व्यय सदुपयोग करनेमें है।

जिव्हाकी सफलता किसीका अवर्णवाद, असत्य तथा कटु बोलनेमें नहीं लेकिन गुणीजनोंकी प्रशंसा सत्य और मृदु वाणीमें है।

चक्षुआकी महत्ता नाटक खेल तमाशे आदि
दुनियाके विविध स्वरूपोंसा निहारनेमें नहीं, लेकिन
देव गुरुके दर्शनमें है।

कान [कर्ण] की सफलता, निंदा बुराई
सुननेमें नहीं, लेकिन शास्त्र-श्रवणमें है।

पैरोंकी सफलता देश विदेश अमित विश्व
भ्रमण मुसाफिरी आदि रसदपट्टीमें नहीं, लेकि
पैदल तीर्थयात्रा करनेमें है।

मस्तककी महत्ता उसे अक्कड़ घना रात दि
ऊपर उठानेमें नहीं, लेकिन महात्माओंके चरणों
झुकानेमें है।

हाथकी सफलता किसीपर कुपित हो मारपी
करनेमें नहीं, लेकिन निर्बल निःसहाय गरीब
उदार मनसे कुछ न कुछ देनेमें है।

जिह्वाकी महत्ता लोगोंसे छुपाकर, मस्त सम

अपने साथ ले जानमें नहीं, लेकिन किसी योग्य को उसमें निष्णात करलेमें है।



बुद्धिकी सफलता किसीको जान बूझकर पत नके गहरे गर्तमें ढकेलनेमें नहीं, लेकिन धर्मके सुदर प्रचारमें पथ भूलोंको राह दिखानेमें है।



अधिकार प्राप्तिकी महत्ता नित्य नये पड्यत्रोंकी रचना कर गरीबोंको कुचलनेम नहीं, लेकिन अवसर आनेपर उनपर उपकार करनेमें है।



बलिष्ठ बननेकी सफलता निर्बलोंको अपने पैरो तले रौंदनेमें नहीं, लेकिन सबलोंसे उनका सरक्षण करनेमे है।



ज्ञानी बननेकी गुरुता सिर्फ वाग्विवाद करनेमें तथा मिथ्याभिमानी बननेमें नहीं, लेकिन सदाचार युक्त जीवन बना अन्योंको इस अज्ञानरूपी अंधकारमय दुनियामें प्रगति हेतु ज्ञान प्रकाश करनेमें है।

चक्षुओंकी महत्ता नाटक खेल तमाशे व दुनियाके विविध स्वरूपोंका निहारनेमें नहीं, है देव गुरुके दर्शनमें है ।

कान [कर्ण] की सफलता, निंदा सुननेमें नहीं, लेकिन शास्त्र-श्रवणमें है ।

पैरोंकी सफलता देश विदेश अस्थिर भ्रमण मुसाफिरी आदि दरबदर्रीमें नहीं पैदल तीर्थयात्रा करनेमें है ।

मस्तककी महत्ता उसे अक्कड़ ऊपर उठानेमें नहीं, लेकिन महात्म झुकानेमें है ।

हाथकी सफलता किसी करनेमें नहीं, लेकिन नि उदार मनसे कुछ न

जिव्हाकी मह

भाग बनना पड़ता है, इसीलिये तो अभी परतंत्र हो।

मालमिष्टान्नादि विविध प्रकारके भोजनका रसास्वादन करनेकी तीव्र लालसा होनेपर भी सूखी रोटियाँ भी प्राप्त होना प्राय असंभव है, इसीलिए तो अभी परतन्त्र हो।

निरोगी जीवन बितानेकी इच्छा बलवत्तर होते हुए भी अनिच्छा वश भयंकर महारोगोंका शिकार बनना पड़ता है, इसीलिए तो अभी परतन्त्र हो।

श्रीमता (धनाढ्यता) अत्यधिक पसन्द होने पर भी दरिद्रता (गरीबी) का अनुभव प्राय करना पड़ता है, इसीलिए तो अभी परतन्त्र हो।

अन्य नमस्कारादि करवाना बहुत ही पसन्द है फिर भी अन्योंको झुक-झुक कर अन्य नमस्कारादि करना पड़ता है, इसीलिए तो अभी परतन्त्र हो।

तथा भोगा भी है–इस मान्यताको धारण करने
नहीं सच्चा ज्ञान है ।

•

पतितोद्धारक प्रभु स्वयं निर्माता नहीं बल्कि
मार्गदर्शक है–इस मान्यताको स्वयम धारण
करावें, यही सच्चा ज्ञान है ।

पौद्गलिक जड़ तेरी ओर अग्रसर होनी नहीं
करती चलता आत्म-स्वतिकी मन्दी राह
बतावे, यही सच्चा ज्ञान है ।

•

मानवभवकी महत्ता भोगमें नहीं बल्कि
त्यागमें आभासी है–इस मधुर सत्यका स्वच्छा
ध्यान कर के, यही सच्चा ज्ञान है ।

•

अग्निम रात और दिन जल रहे तथा विषय
निस्सार रूपी भट्टीमें भुन रहे मानव समुदायको
चिरशान्ति प्रदान करे, यही सच्चा ज्ञान है ।

बाह्य शत्रुओंकी अवगणना कर राग द्वेषादि आंतरिक शत्रुओंसे लोहा लेनेकी शक्ति प्रदान करे, वही सच्चा ज्ञान है।

जन्म और मृत्यु नामक दो महा भयंकर रोगोंसे मानवमात्रको छुटकारा दिलावे, वही सच्चा ज्ञान है।

किसी भी मूल्यपर धर्म रक्षणकी भावना हृदयमें जागृत करे वही सच्चा ज्ञान है।

पुण्य, पाप, परलोक और आत्मा आदिमें अविचल श्रद्धाको दृढ़ बनाये, वही सच्चा ज्ञान है।

सुदेव, सुगुरु, तथा सुधर्मके प्रति पूज्यभावसे सम्मान वृत्ति पैदा करे, वही सच्चा ज्ञान है।

भक्ष्य अभक्ष्य, पेय अपेयादि वस्तुओंकी सच्ची पहचान कराये, वही सच्चा ज्ञान है।

अहम् और ममत्वकी मायामें अंध बनी दुनियाको 'मैं किसीका नहीं और जगतमें मेरा कोई नहीं' भाव भावरूपी प्रकाश ज्योति जगावे, वही सच्चा ज्ञान है।

अन्य किसीके दुर्गुण खोजनेके बजाय अपने दुर्गुणको खोजनेकी प्रवृत्ति प्रकट करे, वही सच्चा ज्ञान है।

पुण्यको पुण्य तथा पापको पाप माननेकी वृत्ति हृदयमें जाग्रत करे, वही सच्चा ज्ञान है।

'त्याग धर्मका अवलम्बन किये बगैर किसीकी मुक्ति हुई नहीं होती तथा होगी नहीं' सिद्धान्तमें श्रद्धा प्रकट करावे, वही सच्चा ज्ञान है।

जगतभरके तमाम पौद्गलीक पदार्थ मिलना सुलभ है, लेकिन सर्वज्ञ कथित सुधर्म मिलना दुर्लभ है, सिद्धान्तमें संपूर्ण विश्वास रखनेकी मति देवे, वही सच्चा ज्ञान है।

सत्ता और संपत्तिका जीवनमें सदुपयोग करना सिखाने, वही सच्चा ज्ञान है।

पत्नीके खातिर जन्मदाता माता पिताको अलग घरमें रहनेके लिये बाध्य करनेकी, नीच प्रवृत्ति न कराने, वही सच्चा ज्ञान है।

दुराचारकी दुष्टता तथा सदाचारकी श्रेष्ठता समझाने, वही सच्चा ज्ञान है।

इसी लोकोपयोगी सर्व ज्ञान मिथ्या है— ऐसी मान्यता पैदा करे, वही सच्चा ज्ञान है।

संसारके समस्त बंधनोंसे मुझे कब मुक्ति मिलेगी आदि मनोरथ उत्पन्न करानेमें सहाय्य करे, वही सच्चा ज्ञान है।

अश्वके साथ गर्दभ, कस्तुरीके साथ कादव तथा हीरेके साथ पत्थरकी तुलना करनेवाली मूर्खता न करावे, वही सच्चा ज्ञान है।

वही कर्मसत्ता क्या तेरे मेरे जैसेको अपने जालसे मुक्त रखेगी

प्रथम तीर्थंकर भगवान श्री आदीश्वरको जिस कर्मसत्ताने बारह मासतक लगातार आहारमें अन्तराय उपस्थित कर सताया—वही कर्मसत्ता क्या तेरे मेरे जैसेको मुक्त रखेगी ?

जिस कर्मसत्ताने देवाधिदेव चरम तीर्थंकर प्रभु महावीरको लगातार साढ़े बारह वर्षतक घोर दुःख व असह्य यातनाएँ दीं वह कर्मसत्ता क्या तेरे मेरे जैसेको अपने जालसे मुक्त रखेगी !

•

एक ही स्थानपर एक साथ साठ हजार पुत्रोंकी मृत्युवार्ता सुन चक्रवर्ती सगरको दुःख व

शोककी गहरी खाड़में निम मत्ताने क्षणभरमें पटक दिया—वह कर्मसत्ता क्या तेरे मेरे जैसेको अपने जालसे मुक्त करेगा ?

..

जिसकी सेवामें रात दिन एक पलका भी अंतर पड़े बिना बत्तीस सहस्र मुकुटधारी राजा महाराजा तत्पर रहते थे ऐसे चक्रवर्ती सनत्कुमारका थोड़ेसे भागमें जिस कर्मसत्ताने सोलह महारोगोंका शिकार बना दिया, वह कर्मसत्ता क्या तेरे मेरे जैसेको अपने जालसे मुक्त करेगा ?

.

रावण जैसे ईश्वभक्त, धर्मभक्त शासनभक्तकी राजराजेश्वरद्वारा संचालित त्रिखंडका विशाल राजसत्ता जिस कर्मसत्ताने पलक मारते न मारते छीन ली, वह कर्मसत्ता क्या तेरे मेरे जैसेको अपने जालसे मुक्त करेगी ?

. .

पितृभक्त न्यायप्रिय प्रजाप्रिय धर्मिष्ठ श्री रामचंद्रजीको भी जिस कर्मसत्ताने लगातार चौदह वर्षतक जंगलोंकी असह्य सजा भुगवी

यह कर्मसत्ता क्या तेरे मेरे जैसेको अपने जा
मुक्त रखेगी !

सती शिरोमणी, नारिरत्न सातामाता
जिस कर्मसत्ताने रामचन्द्रजीके मनमें
संदेह निर्माण कर, वनवासकी असह्य पी
यातना दिलाई वह कर्मसत्ता क्या तेरे
जैसेको अपने जालसे मुक्त रखेगी !

८

छप्पनकोटि यादवाधीश, अर्जुनसखा श्री
महाराजकी जिस कर्मसत्ताने जीवनकी
पानी-पानी पुकारते गुजारी-वह कर्मसत्ता
क्या तेरे मेरे जैसेको अपने जालसे मुक्त रखेग

महाबलवान महाभारतनायक पांच पांडवों
जिस कर्मसत्ताने लगातार बारह वर्षतक भिर
वना जाकर जगलकी खाक छनवाई वह कर्मस
क्या तेरे मेरे जैसेको अपने जालसे मुक्त रख

सत्यवादी हरिश्चन्द्रको जिस धर्मसत्ताने तारामता जैसी अपनी सती साध्वी पतिपरायण महारानीसे नाता तुड़वा नीच भंगीके घर पानी भरवाया, वह धर्मसत्ता क्या तेरे मेरे जैसको अपने जालसे मुक्त रखेगी !

महाराज दधिवाहनकी सुशील विनयी पुत्री चन्दनबालाको जिस सत्ताने जुल्मोसीतमसे भरे आम चौकमें पशुकी नाईं बिकना पड़ा, वह धर्म सत्ता क्या तेरे मेरे जैसको अपने जालसे मुक्त रखेगी ?

मगधाधिपति चरम तीर्थंकर न्यायाधिदेव प्रभु महावीरके अनन्य भक्त राजाधिराज श्रेणिकको जिस धर्मसत्ताने महलकी सहल छुड़वा कैदखाने भिजवा प्रति दिन अपने ही पुत्र कुणिकसे पचास कोड़ोंकी मार मरवाई, वह धर्मसत्ता क्या तेरे मेरे जैसेको अपने जालसे मुक्त रखेगी ?

जिस सत्ताने नल जैसे न्यायप्रिय-प्रजाहितैषी राजाको जुएके बुरे व्यसनमें फँसाया, राज्यभ्रष्ट किया, वनवासके असह्य दुःख भोगनेके लिये छोड़ दिया—वह कर्मसत्ता क्या तेरे मेरे जैसेको अपने जालसे मुक्त रखेगी?

जिस सत्ताने मालवपति राजा मुंजसे दर-दर भिक्षा मँगवाई—वह कर्मसत्ता क्या तेरे मेरे जैसे लघु जीवको अपने जालसे मुक्त रखेगी?

जिस कर्मसत्ताने कलावती सी सतीके दोनों हाथ निःसंकोच हो कटवाये—वह क्या तेरे मेरे जैसे लघु जीवको अपने जालसे मुक्त रखेगी?

अतः

राजा-महाराजा, शेठ साहुकार, गरीब धनी ज्ञानी अज्ञानी, नर-नारी, वृद्ध बालकादि जिनको इस सत्ताके असह्य पीड़ा-यातना और वेदनासे मुक्त होना हो तो उन्हें त्वरित गतिसे धर्मसत्ताकी पवित्र शरणमें आना चाहिये।

यही सच्ची मानव सेवा

जन्म-मरण नामक दो भयंकर रोगोंसे पीड़ित मानव मात्रको उसकी पीड़ामें सर्वथा मुक्ति दिलाने हेतु निरंतर धर्म औषधि पान कराना यही सच्ची मानव-सेवा है।



राग और द्वेष ये दो प्राणिमात्रके दो जबरदस्त दुश्मन हैं और उनके विनाशार्थ सभीको प्रयत्नशील बनाना—यही सच्ची मानव सेवा है।



विषय-कषायादि कुमार्ग-पर द्रुतगतिसे आगे बढ़ती मानव-जातिको उसमें बिछे शीघ्र दुःखदादि कण्टकोंसे सावधान करना-यही सच्ची मानव-सेवा है।



माया और ममताकी गहरे कूपमें डूब रहे
सारी दुनियाको ममता और त्यागकी डोरी
सहारे ढूंढनेमें बचाना—यही सच्ची मानव से
है ।

रात और दिन अहर्निश सिर्फ पौद्गलिक
उन्नति प्रगतिके पाठ सिखानी वाली दुनियाके
आत्मोन्नतिकी सच्ची राह सुझाना-बताना, यही
सच्ची मानव सेवा है ।

जगत समस्तमें रहे छोटे-बड़े सभी प्राणियों
रक्षार्थ " आत्मवत सर्व भूतेषु " घोषणा सर्व
बुलन्द कर—गुंजारित कर, सभीको दयाकी महत्
समझाना—यही सच्ची मानव सेवा है ।

मानव-मात्रके हितको लक्ष्यमें रख पशु
पक्षियोंका बेरहम हत्या-संहार करनेकी सल
देनेवालोंको डर बतानेकी सच्ची सलाह देने

लिये उद्यत करना—यही सच्ची मानव सेवा है।



राज्य-ऋद्धि और सत्तादि विनाशक पदार्थोंके पीछे अमूल्य ऐसे मानव-भवको फिजूलमें व्यतीत करनेवालोंको उसके दुर्लभत्वका सच्चा ज्ञान दिलाना—यही सच्ची मानव सेवा है।



अनादि कालसे मोह रूपी कुंभकर्णी निद्रामें निद्रित अखिल विश्वको, धर्म-ढोल बजा जाग्रत करना—यही सच्ची मानव सेवा है।



मोह राजाद्वारा भरे 'अहम्' व 'मम' नामक रस्सीके जालमें फँसे अंधी बनी जनताको 'नाहम्' व 'नमम' प्रतिज्ञा द्वारा प्रत्युत्तर शिला, जालमेंसे छुडाना—यही सच्ची मानव सेवा है।



आधि व्याधि और उपाधि नामक त्रि
विधाग्नि के असह्य दाहसे दहित [जलित]
जगतको, सम्यग् दर्शन, ज्ञान तथा चारित्र
रूपी शीतल छींटोंसे शांत बनाना—यही सच्ची
मानव सेवा है ।

*

सिर्फ ऐसी लौकिक हितसाधक व्यवहारिक
शिक्षाके पीछे सहस्रों लाखोंकी संपत्ति पानीकी
तरह बहानेवालोंको इस लोक व परलोक के
दोनों लोकोंका एकांत हित-साधक धार्मिक
शिक्षाके भी पानीकी तरह पैसे बहानेकी प्रेरणा
करना यही सच्ची मानव सेवा है ।

*

कर्मसत्ता द्वारा नियंत्रित [दबाई] आत्मा
अतुल संपत्ति भंडारको हस्तगत करने हेतु यो
उपाय-योजना करना, यही सच्ची मानव से
है ।

धर्म ध्यानादि धार्मिक क्रियाओंसे ही जगत
अकल्याण हुआ है—ऐसा मिथ्या प्रचार करनेवा

पर भूल प्रचारकोंकी निरर्थक बकवाससे कल्याण-मार्गपर चलती, भोली प्रजाको सत्य वस्तुस्थितिका भान कराना—यही सच्ची मानव सेवा है।

सदाचार तथा सद्विचारोंसे कोसों दूर भागते मानव मात्रको सदाचार तथा सद्विचारों के निकट लाना—यही सच्ची मानव सेवा है।

सब धर्मोंकी समानताके भूत-पिशाचसे मुक्त समान हकोंकी सामाजिक जालमें फँसे अज्ञान सबै व समान हकका वास्तविक [illegible] समझाना—यही सच्ची मानव सेवा है।

नाशवान शरीरकी रक्षाके लिये अविनाशी आत्माकी बरबादीका सामान [illegible] वाले मूर्ख शिरोमणी हैं—ऐसा [illegible] करना नहीं—यही सच्ची मानव [illegible]।

—

सच्ची सलाह

निहारनेकी मनीषा हो तो मैं कैसा हूँ उसे ही निहारना।

रोनेकी इच्छा हो तो अपने अधम कृत्यों (कुकृत्यों) के लिए ही रोना।

ग्रहण करना हो तो सबमें रहे उत्कृष्ट गुणोंको ही ग्रहण करना।

पचानेकी अभिलाषा हो तो सदा कटु बातोंको जीवनमें पचाना।

पान करनेकी इच्छा हो तो जीवनमें सदा सद्गुरु प्रभुकी अमृतवाणीका ही पान करना।

लूटनेकी तीव्र लालसा हो तो सिर्फ धर्म धनको ही सदा लूटना।

कुपित होना हो तो अपनेमें रहे क्रोधपर ही सदा कुपित होना।

अभिमानी बनना हो तो सदा धर्माभिमानी ही बनना।

चाल-बाजी खेलो तो सदा मोह राजाके साथ ही चालबाजी खेलना।

कुछ करनेकी तमन्ना हो तो सभीका भला करना।

बोलनेकी इच्छा हो तो सदा सत्य मधुर वचन ही बोलना।

जड़मूलसे किसीको नष्ट करनेकी अभिलाषा हो तो सिर्फ कर्म शत्रुका ही नाश करना।

अहम् और ममकी मार
"मैं किसीका नहीं और जगत"
मादपी प्रकाश ज्योति यता

अन्य किमाके दुर्गुण
दुर्गुणको खोजनकी प्रवृत्ति
ज्ञान है।

पुण्यको पुण्य तथा पा
वृत्ति हृदयमें जागृत करें, प

'त्याग धर्मका अवलम्ब
मुक्ति हुई नहीं होती
सिद्धांतमें श्रद्धा प्रकट कराव,

जगतभरके तमाम
सुलभ है, लेकिन सर्वज्ञ क
दुर्लभ है, सिद्धांतमे
मति देने, यही सच्चा ज्ञान

संग किया न चले तो धर्म-बंधुओंका संग करना सदा जीवनमें ।

व्यसन रखो तो सिर्फ दानका ही ।



दूर भागो तो सदा दुर्जनसे ही दूर भागना ।



अनुमोदन करो तो सदा धार्मिक क्रियाकांडों काही अनुमोदन करना ।



तैरना सीखो तो सदा संसार समुद्रको तैरकर पार करना ।



नामानिशान मिटाना चाहो तो अधर्मका ही नामोनिशान मिटा देना सदा अपने जीवनसे ।



प्रगति करना हो तो धर्मकार्यमें ही करना ।



नाटकावलोकन करनेकी अभिलाषा हो तो अपने ही संसार-नाटकका अवलोकन करना ।



निद्रा किए बिना रहा न जावे तो सदा सर्व स्वर्गिदाही करना।

✢ ✢

लोभ न छूटे तो धर्म धनका ही सदा लोभ करना।

✢ ✢

समद-मूर्तिका त्याग न कर सका तो वीतराग देवद्वारा भावित गुनवचनोंकाही समह करना सदा जीवनमें।

✢ ✢

डरो तो पापसे डरो।

✢ ✢

श्रवण करनेकी लालसा जागृत हो उठे तो सदा धर्मकथा ही सुनना।

✢ ✢

वाचन करनेकी तीव्र इच्छा हो मनमें तो सदा ऐसी पुस्तकें पढना जो तुम्हारे जीवनमें धर्म स्रोत बहा दें।

✢ ✢

उपस्थित ही रहते हैं। हे चेतन ? यह सब पूर्वभवके पुण्यका ही प्रभाव है।

※ ※

अनेकोंका माँगनेपर जल भी प्राप्त नहीं होता। जब कि तुम्हें विना माँगे दूध मिलता है। हे चेतन? यह सब पूर्व भवके पुण्यका ही प्रभाव है।

※ ※

इस पापी पेटके कारण जगतमें अनेकोंको झुक-झुक कर सलाम करनी पड़ती है, जब कि तुम्हें अनेक जन सलाम कर रहे हैं। हे चेतन! यह सब पूर्व भवके पुण्यका ही प्रभाव है।

※ ※

मोह-मायासे प्रचुर संसारमें कितयक मानव कदम कदमपर अन्याकी ठोकर खा रहे हैं। जब कि तुम सबसे गौरव प्राप्त कर रहे हो। हे चेतन? यह सब पूर्वभवके पुण्यका ही प्रभाव है।

※ ※

कितयकको सुखी संसारकी इच्छा होनेपर भी एक भी सामग्री मौजूद नहीं होती। जब कि

तुम्हे अगर किसी द्वारा की गयी अपनी निंदा पसन्द नहीं तो तुम्हे भी अपनी निंदा करनेका कोई अधिकार नहीं।

* *

दूसरोंके द्वारा तुमपर मिथ्यारोप आ जानेपर अगर तुम क्षणार्धमें लाल पीले हो जाते हो तो तुम भी कभी किसीपर मिथ्यारोप न करो।

* *

तुम्हारा कोई रहस्योद्घाटन होनेपर अथवा पोल फैसनेपर अगर तुम्हे अत्याधिक दुःख होता है तो तुम भी किसीका कभी रहस्योद्घाटन न करो।

* *

तुम्हारी कोई शिकायत करे, यह अगर तुम्हे इष्ट नहीं तो, भूलकर भी तुम कभी किसीकी शिकायत न करो।

* *

किसीके द्वारा किया गया विश्वासघात अगर तुम्हें नापसन्द है तो तुम्हें किसीका विश्वासघात करनेका कोई अधिकार नहीं।

* *

तुम्हें प्राप्त सारी सुविधायें कोइ छीन लें, अगर यह तुम्हें अच्छा नहीं लगता तो तुम खुद भी किसीकी सुविधा छिननेकी कभी नीच प्रवृत्ति न दिखाओ।



जिस तरह अगर कोई तुम्हें दुःख दर्दके गहरे गर्तमें ढकेल दे यह कतई पसंद नहीं। ठीक उसी तरह तुम भी किसीको दुःख दर्दके गर्तमें ढकेलनेकी कोशिश ना करो।



अगर कोई तुम्हारा अपमान (insult) करता है तब तुम्हारा मिजाज सातवें आसमानपर सवार हो जाता है तो तुम भी कभी किसीका अपमान करनेके लिए तत्पर न बनो।



तुम्हारी इज्जत-आबरूको जरा भी आंच आने पर तुम अपराधीको लठ्ठ ले मारनेके लिए तैयार हो तो अन्यकी इज्जतको धोखा पहुँचे ऐसे शब्द कभी कहीं मत उच्चारो और न लिखो।

भाइ तुम्हारा बुरा करे यह तुम्हें अगर बिल्कुल अच्छा नहीं लगता तो तुम्हें भी किसी के प्रति बुरा करनेकी प्रवृत्तिको जीवनमेंसे जड मूलसे उखाडना होगा।

तुम्हारा बुरा हो ऐसी प्रवृत्ति अगर कोई करता है वह तुम्हें बिल्कुल पसंद नहीं तो फिर तुम्हें भी, जान भले चली जाय लेकिन कभी किसीका बुरा करने हेतु कमर नहीं कसनी चाहिये।

तुम्हें अपनी जिंदगी जितनी प्यारी है ठीक उसी तरह अन्यको भी अपनी जिंदगी उतनी ही प्यारी होती है। अतः कभी भूलकर भी किसीके जीवनको नष्टप्राय करनेकी अधमप्रवृत्तिको अपने जीवनमें स्थान मत दो।

संक्षेपमें

कहनेका यह तात्पर्य है कि जो बर्ताव तुम खुदको पसंद नहीं वह बर्ताव दूसरोंके प्रति मत करो। ज्यादा धर्म अगर तुम न कर सको मगर इतना करोगे तो भी काफी है।

चिनगारियाँ

सच्चा योद्धा— वही जो पाँचों इन्द्रियोंपर विजय प्राप्त करे।

सच्चा पंडित—वही जो सच्चे धर्मकी आराधना करे तथा उसे जीवनमें उतारे।

वक्ता—वही जो सदा सत्यका ही रंग मंच परसे सर्वत्र जयघोष करे।

दानेश्वरी—वही जो विश्वके सर्व प्राणियोंको अभयदान प्रदान करे।

बुद्धिका फल—वही जो तत्व-चर्चाके अंतमें सबमें आनंद रस बहा दे।

मन्या मार-यहा जीवनका जो हमें इस दहमे व्रत पच्चखाण धारण कर सके ।

* *

अयको ज्ञान अर्पण करना यही ज्ञानोपार्जन का सच्चा मर्म है ।

* *

निर्बल निर्धनका सरक्षण करना यही शक्ति धारण करनेका अर्थ है ।

* *

धम विहीनता यही हमारी सच्ची दरिद्रता ।

* *

सुदेव, सुगुरू तथा सुधर्ममें अचल अटल श्रद्धा यही जीवनकी सच्ची सपत्ति ।

* *

असतोप-लोभ यही हमारा सचा दु ख ।

* *

जीवनमें अड्डा जमा बैठी तस्कर व जार वृत्ति यही हमारे जीवनकी सबसे बडी मलिनता ।

* *

सम्यग्ज्ञान-अर्पण करना, यही सच्चा दान।

अति विकट परिस्थितिमें भी न्याय-मार्गपर चलित हुए बिना डटे रहना-यही सच्ची धैर्य वृत्ति।

राग और द्वेष यही दोनों आत्माके सच्चे शत्रु।

गुरु मिलन योग होते हुए भी जो गुरु वचन श्रवण कर, अपनेसे पालन करना नहीं चाहता, वही सच्चा मूर्ख।

अपकार-करनेवाले पर भी उपकार करना यही सच्ची सज्जनता।

रात और दिनभर नित विषय वृत्तिमें रत रहनेवाला ही सच्चा अंध।

दूसरोंकी निंदा करनेवाला ही सचा धोबी।



अन्यके गुणोंकी स्तुति कर, जीवनमें ग्रहण करनेकी वृत्ति रखनेवाला तथा अपनेमें रहे अव गुणोंकी निंदा करनेवाला ही सच्चा द्रष्टा।



विवेक तथा विनयहीन मानव ही सच्चा पशु।



चपल लक्ष्मीका खुले हाथों सद्उपयोग करना ही संपत्ति-प्राप्तिकी सच्ची महत्ता।



रोगियोंके रोगको जडमूलसे उच्छेदन करनेकी प्रवृत्तिसे बेफिक्र रह, अगणित धन संपत्तिसे अपना घर भरनेवाला वैद्य चिकित्सक [Docter] ही सच्चा यमराज।



स्वपदार्थको अन्यकी तथा अन्यके पदार्थको अपना मानना ही सच्ची अज्ञान वृत्ति।



आत्मामें रहा घोर अज्ञान ही मावस (अमावस्या) का सच्चा अंधकार।

विषय-कामादि तृष्णाको मिटानेवाली प्रभु वीतराग देवकी वाणी ही सच्चा जल।

स्वच्छानुसार अपनी धन सपंत्तिको सुमार्गपर खर्च करनेवाला ही धनका सच्चा मालिक।

परनिंदा करनेवाला मिथ्या आक्षेप रखनेवाला और अन्यके रहस्यका भंडाफोड करनेवाला ही सच्चा चाडाल।

सत्य बोलना, तपश्चर्या करना, इंद्रियोंका निग्रह करना और प्राणिमात्रके प्रति दयावृत्ति रखना यही सच्ची शौच क्रिया।

विषय कषायाग्निमें अहर्निश जलता आत्माको बचानेवाला ही सच्चा उपकारी (उपकारक)।

जन्म और मृत्युरूपी दो महारोगोंका जहाँ जड़मूलसे छेदन होता हो, वही सच्ची अस्पताल (Hospital)।

✤ ✤

अपरको सतानेकी दुष्ट इच्छा ही हमारी सच्ची दुर्जनता।

✤ ✤

समय आनेपर भी सत्य न बोल, हमेशा मीठा बोल, खुशामद करनेकी आदत ही सची खुशामद-वृत्ति।

✤

अपना तथा समय मिलनेपर अन्यका कल्याण साधनेकी तमन्ना ही सची साधुता।

✤ ✤

अष्टकर्मसे आवरणसे ढँकी आत्माको मुक्ति दिलाना ही सची स्वराज्य।

चतुर्गतिरूप विश्व ही सचा कारागृह [Jail]।

✤ ✤

हित शिक्षा सुननेकी इच्छा न रखनेवाला ही सच्चा बहरा [बधिर]।

दुर्गतिके गहरे गर्तमें गिरते जीवोंको बचानेवाला ही सच्चा धर्म।

पिता तुल्य बन प्रजाका संरक्षण करे वही सच्चा राजा।

विपत्ति तथा मुश्किलियोंके समय जो सहायता दे, वही सच्चा मित्र।

कर्मके मजबूत बंधनोंको तोड़नेमें समर्थ क्षमा वही एक सच्चा शस्त्र।

अपने स्वार्थके लिए अन्यके हितको छिन्नभिन्न करनेवाला ही सच्चा दानव।

सङ्कट-समयमें भी अधमकार्य न करनेकी वृत्ति रखना ही सच्ची कुलीनता ।



अपने सन्तानके आत्महितकी रात दिन चिंता करनेवाला ही सच्चा पालक ।



जो सुख जीवनमें आनेके पश्चात् कभी जावे नहीं वही सच्चा सुख ।



आत्माके गर्भमें छिपे अनंत गुण भंडारोंको शोधकर प्रकट करे वही सच्चा विज्ञान ।



दिन प्रतिदिन नित्य ही आत्माको धर्म मार्ग-पर आगे और आगे-कूच करनेके लिए किया जाने वाला प्रयत्न वही सच्ची प्रगति ।



संसाररूपी समुद्रके प्रचण्ड तूफानमें अस्थिर हो
जीवन नैयाको, डोलती थाम, मुक्ति किनार
दिखावे वही सच्चा माझी।

* *

तृष्णा और लोभवृत्ति ये दोनों ही जगतके
प्राणियोंको हैरान करनेवाली सच्ची पिशाचिनियाँ

* *

मोहसे तेरा कमाया
धन यहाँ रह जायगा
प्रेमसे अति पुष्ट किया
तन जलाया जायगा।

पू. आचार्य देवेशश्री
विजय लब्धिसूरीश्वरजी महारा

कटु सत्य

पापीकी अपेक्षा पाप प्रचारक ही बहुत खतरनाक है। पापी तो सिर्फ अपना ही आत्मनाश करता है लेकिन पाप प्रचारक तो अनेक भोली आत्माओंको दुर्गतिके गहरे कूपमें ढकेलता है।



मूर्ति भंजकोंकी अपेक्षा मूर्तिके प्रति लोगोंमें रहे सद्विचारोंका खण्डन करनेवाले ही ज्यादा अपराधी है।



पापस्थानमें अगर किसीकी वैराग्य भावना उत्पन्न हो जाय तो उसके लिए संयोगवशात् वैसी ही भवितव्यता, पूर्व भवके सुसंस्कार तथा सम्यग्ज्ञान ही पूर्णरूपसे आभारी हैं। लेकिन पापस्थान तो एकांतिक लिए बिलकुल त्याज्य है।



किसी प्रकारके गच्छ (गुट्ट) पक्ष अथवा पार्टीका हमें बिलकुल मोह नहीं–बंधन नहीं। ऐसा धान्ननवाले सब नक्ता भी एक प्रकारकी पार्टीसे ही सबाधित हैं। और एक प्रकारके पक्षके भी हैं।

वस यह विश्वके लिए परम नुकसानकारक पद है यों कहनेवाले और लिखनवाले केवल माध्यस्थ्य रूपी विषमज्वरसे पीडित निकृष्ट कोटिक रोगी हैं

जिस युगमें स्वच्छदता और शिथिलता प्रचारक अनेक दुरुपयोगी साधनोंका [illegible] जाता है उस युगमें धर्मके बंधनों व नियमों आर कडे [मजबूत] बनानेकी [illegible] कता है। इन बंधनोंको शिथिल [illegible] स्वच्छदतापोषक हैं।

पुरातन कालीन इतिहास [illegible] तथा संशोधनकारोंका, ' मैं यों [illegible] — ' कहोंसे

आया ' ' कहाँ जाऊँगा-मेरा परिभ्रमण किस कारणवश है।' आदि अपने इतिहासकी भी शोध व संशोधन करना जरूरी है।



जिस तरह नाथवाला बैल कहलाता है और बिगर नाथका साँड। ठीक उसी तरह नायक बिना टुकड़ी और अंकुश बगैर समूह भी साँडके समानही है।



किसी चीजकी कमी अथवा गरजमंद ग्राहक की आवश्यकताका दुरुपयोग कर चीजें मुँह मांगे दाम बेचना यह भी एक प्रकारकी अनीतिही है।



मुनिका नाम और पापोंके इच्छुकका उसके अनुरूप शुद्ध चारित्र तथा शास्त्र आज्ञाके पालनका मोह भी रखना चाहिए।



पराई पंचायत करनेमें आजतक तूने अपने जीवनमें बहुत कुछ खोया है। लेकिन पूर्वभवके शुभ कर्मोदयसे प्राप्त आत्म पंचायत करनेकी घड़ी

को अब तो समझदार बन मत गँवाओ।

* *

रामराज्य स्थापन करनेकी मर्यादा रखने वालाको सहस्रों,लाखों वर्षों पहली पुरातनकालीन संस्कृति अपनानी पड़गी और आजकी नूतन संस्कृतिसे संबंध विच्छेद करना होगा।

* *

इस लोकमेंसे परलोकमें तथा परलोकमेंसे अन्यलोकमें परिभ्रमण करनेवाली आत्माओंकी परिभ्रमण क्रिया निरंतर बंद होनेकी सच्ची राह सुझानेवाले ही सच्ची लोक सेवा कर रहे हैं।

सदाचार और दुराचार

सदाचार यह बहुमूल्यवान ऊँचा जातिका सुवर्ण है जब कि दुराचार सिर्फ लोहामात्र है।

सदाचार यह स्वर्ग-गतिकी एकमात्र चाबी है जब कि दुराचार यह नरकका मुख्य द्वार।

सदाचार सुखका भंडार है जब कि दुराचार यह दुःख दर्दोंका आश्रयस्थान एक बड़ा पर्वत।

सदाचार यह निरंतर जगमगाती प्रखर ज्योति शिखा है जब कि दुराचार मावसकी तिमिराच्छन्न भयानक रात्रि।

सदाचार यह वंशपरम्परागत चली आयी सचा ऐश्वय जहोनलाली है जन कि दुराचार ता निरि दरिद्रता मात्र है।

सदाचार यह सचा भूषण है, जन कि दुराचार यह निरा दूषण है हमारे जीवनका।

सदाचार यह अलौकिक दैवी जीवन है, जब कि दुराचार सिर्फ पशु जीवन मात्र है।

सदाचार यह सम्मान-यश कीर्तिका सुधावृष्टि है जब कि दुराचार यह अपमानरूप धूलीकी वर्षा मात्र है।

सदाचार यही सची विद्वत्ता जब कि दुराचार यह नीरि अज्ञानता।

सदाचार यह हमारे जीवनका सचा शृंगार है, जब कि दुराचार यह जीवनको क्षणभरमें भस्मीभूत कर देनेवाला एक भयकर शोला [अगार]।

सदाचार यह छिद्रविरहित एक अभग्न जलयान (steamer) है जब कि दुराचार यह छिद्र वाली नौका मात्र है।

३ ✤

सदाचार यह विश्वका सबसे बड़ा रक्षक है जब कि दुराचार यह सबसे बड़ा भक्षक।

४ ✤

सदाचार यह जीवनकी सबसे बड़ी सज्जनता है जब कि दुराचार यह सबसे बड़ी दुर्जनता।

५ ✤

सदाचार यह सद्गतिमें ले जानेवाली सबसे बड़ी सुन्दर मजबूत सड़क है जब कि दुराचार यह दुर्गतिकी सबसे गहरी खाई [घाटी]

६ ✤

सदाचार यह जीवनका सबसे बड़ा मित्र है जब कि दुराचार यह बड़ा शत्रु।

७ ✤

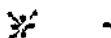
सदाचार यही सच्ची मानवता जब कि दुराचार यह तो मानवताका नीलाम मात्र है।

यह भी पढिये

वैराग्यका सबध सिर्फ आयुके साथ नहीं बलिक पूर्वभवमें उपार्जित पुण्य-कृत्यों तथा इस जन्ममे उसके धर्मिष्ट और सुसस्कृत परिवार द्वारा नित्य प्राप्त सचित गय सुसस्कारोंके साथ है।



कितनेक बच्चोंमें व्यवहार-कुशलता, होशियारी प्रतिभा तथा हानिर जवानी आदि जिन शक्तियोंके दर्शन होते हैं उनके दर्शन वृद्ध तथा युवक वर्गमें भी कभी नहीं होते।

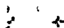


Once failure is half success यानि एक बार किसी भी कार्यमें असफलता प्राप्त मानव अर्धे विजयी माना जाता है-कहावतानुसार वैराग्य प्राप्तिके पश्चात पतित हुऐ मानवको भी आधी सफलता तो प्राप्त हो जाती है। अल्पाशम ^

विनय दिखा वहां आत्मार्थी धार्मिक प्रवृत्ति भी कुछ अंशोंमें सराहनीय है।



घोर अंधकार अथवा प्रखर प्रकाशमें जान अनजान पर या बाहर पानीमें आया अमृत निज रत्नका ही कार्य निरंतर करता है। ठीक उसी प्रकार किसी भी कारणवश अधिकार की कुर्सी त्याग पुनि शोभदायक हो जाती है।



चिकित्सक (Doctor) के कायमें धार्मिक नेता (Leader) की तथा धर्मशास्त्राके कायमें चिकित्सक महोदयकी सलाहका कोई मूल्य नहीं रखती। ठीक इसी तरह अन्ततः प्रशासकीय तथा शासनतन्त्रमें धार्मिक नेताओंकी सलाह बिल्कुल व्यर्थ है।



हिंसा असत्य, चोरी अनीति, व्यभिचारादि भयानक अपराधोंमें सब मानव समुदायको, जैन

साधुगण बिना कोई मूल्य लिये भयकर अपराधो से सदा कोसों दूर रहनेका निस्वार्थ उपदेशामृत पिलानेका रात्र दिन अविश्राम प्रयत्न करते हैं। और विश्वमें शांति तथा सुशासन स्थापित करनेमें उनका सबसे बडा हाथ है यह बात भूलने जैसी नहीं।

सोपानपरसे बच्चोंके नीचे गिर जानेके भयवश उसे दूर हटानेके बदले बच्चोंको ही संभलकर चढने की सलाह दी जायँ। जूँसे भयभीत हो शरीरपरके वस्त्रको उतार फेंका न जायँ बल्कि स्वच्छता और साफ सफाईकी ओर अधिक ध्यान दिया जायँ। ठीक उसी तरह पतन होनेके डरसे धर्मको जीवनसे दूर किया न जायँ, बल्कि पतितावस्था की जडका उच्छेदन किया जायँ।

—

कल्याण के पथपर

मुक्तिको प्राप्त किए बिना सम्पूर्ण और शाश्वत सुख इस संसारमें और कहीं नहीं मिलता।

* *

निर्मल बनाना चाहिए आत्माको, शरीरको निर्मल बनानेसे आत्माको कोई लाभ नहीं होता।

* *

राजा—महाराजादि सभी इस पृथ्वीको छोड़ समयके साथ चले गये, लेकिन पृथ्वी किसीके साथ नहीं गई जो तेरे साथ जायगी क्या ?

* *

जर, जमीन, और जोरू ये तीनों क्लेशके छोरु हैं इन तीनों परसे जब हमारा जी उठ जायगा तब हमारेमें क्लेशका नामोनिशान न रहेगा।

* *

श्री तीर्थंकर परमात्माकी अविरत सेवासे ही हमें मोक्षका मीठा मेवा हासिल होगा।

* *

मन जिसका मैला है और तन उजला, उस [illegible] विश्वास भूलकर भी न करो।

* *

हितके शब्द श्रवण नहीं करनेवाले ही सच्चे बधीर है। वे इस जीवनको कभी सफल नहीं बना सकते।

* *

मान तो आत्माका क्रूर शत्रु है, जिसने [illegible] बलीजीके केवल ज्ञान प्राप्तिमें रुकावट [illegible]

* *

विनय धर्मका मूल है, मूल नहीं [illegible] ठीक उसी तरह जहाँ विनय [illegible] दूसरे गुण होंगे भी कैसे।

* *

जन्म और मरण ये दो ही संसारके मूल रोग हैं अतः सब संसारी पुरुषतया उद्यम कर, इन दोनोंको जडमूलसे उखाडनेकी कोशिश करनी चाहिए।

यदि धर्मका पालन अच्छी तरहसे न बन सके तो गृहस्थ धर्मका अनुसरण कर मानव जन्मको जरा तो सफल कर दो।

जीवनका मुख्य ध्येय व उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति है। अन्य उद्देश्य इसके बाद है पहले नहीं।

मनपर विजय पाना बहुत ही कठीन है। लेकिन जिसने उसपर विजय प्राप्त कर ली है, उसने सबपर विजय हासिल कर ली है।

हाट हवेली और हीरा उन्नतिका प्रतीक नहीं बल्कि अवनतिका गहरा खड्डा है जिसमें गिरनेके बाद मानव पुनः ऊपर मुश्किलसे आ सकता है।

राम राज्य बनानेकी तेरी मनीषा हो तो हे भाव' रामचद्रजीका न्याय, नीति, विनय, भ्रातृभाव धर्मपरायणता, आदि गुणोंका अपनाना चाहिए।



जडवादका तूफान अविरल विश्वपर छा जाना चाहता है, अत उसे रोकनेके लिए आवश्यक अमोघ शस्त्र सम चैतन्यवादकी वृत्ति हेतु, तन मन धनसे प्रयत्न करना चाहिए।

इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

— मुनिराज श्रीमद्विमाविजयजी

* *

मानवभव प्राप्त हुआ, यह तो ठीक, लेकिन उसका दूसरोंके हेतु उपयोग कितना हुआ ! इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

* *

वीतराग भगवान जैसे सुदेवकी प्राप्ति हुई ता अवश्य, लेकिन उनकी पूजा अर्चना करनेका याग कितना मिला और आज्ञाका जीवनमें पालन कितना किया ? इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

*

अमुक पदार्थ बुरा अथवा अच्छा यह बात तो अच्छी तरहसे समझमें आ गई। लेकिन सुदेव कौन और कुदेव कौन ! इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

* *

मुनिपदकी महत्ता जान लेनके पश्चात् उनकी सेवा सुश्रुषा न हो तो खैर, लेकिन हमें उनकी अवहेलना [आशातना] क्यों करनी चाहिए ! इस बारमें कभी सोचा भी है ?



धर्मके मर्म [रहस्य] को अच्छी तरह समझे बिना व्यर्थमें ही उसमें टांग क्यों अड़ानी चाहिए ! इस बारेमें कभी सोचा भी है ?



धर्म करनेसे कितने लाभ होते हैं और उससे कितना नुकसान होता है ! इस बारेमें कभी सोचा भी है ?



आनन्द विलासी वातावरण [illegible] मय प्रवृत्तियोंमें रत रहनेवाले कभी समय आनेपर धर्म क्रिया [illegible] करते। तो मर जैसे पामर [illegible] किस प्रकार की मुश्किलियाँ आती हैं ! इस बारेमें कभी सोचा भी है ?



अतुल राजऋद्धिके स्वामी कितने नम्र विनयी तथा निराभिमानी होते हैं–लेकिन मेरे जैसा फक्कड मस्त फकीर अपनी अहम् भावनाको क्यों नहीं छोडता ? इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

अगर कोई मेरा जरासी भी निंदा करता है, तो मैं व्यर्थहीमें मारे क्रोधके पागल हो जाता हूँ तो मुझे फिर दूसरोंकी निंदा क्या करनी चाहिए ? इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

मेरे ये दोनों चक्षु बंद हो जानेके पश्चात् यहाँकी सब ऋद्धि सिद्धि यहींपर रह जानेवाली हैं। तो फिर मुझे 'मैं और मेरा' के नशेमें ऐसे व्यर्थहीमें मुसीबत क्यों मोल लेनी चाहिए ! इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

मृत्यु यह अनादि अनंत कालसे चली आती एक अमिट बड़ुसत्य है तो फिर मैंने संसार

मातका पार करन, तथा शिव सुन्दरीसे विवाहके पवित्र गठबंधनमें बंधन हेतु आनतक क्या क्या किया ? इस बारेम कभी सोचा भी है ?

गहूँ तथा कंकड-पत्थरके मिश्रणमसे मैं गेहूँओंका रख कंकड पत्थर फेंक देता हूँ, तो फिर अनेक गुणोंमसे सुगुणको क्या ग्रहण करता हूँ ? इस बारेमें कभी सोचा भी है ।

पालक, जो कुछ कहते हैं, मेरे हितके लिए ही होता है तो फिर उनकी शिक्षापर मुझे क्रोध क्या करना चाहिये ? इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

मानव जन्मकी महत्ता त्यागमेंही सर्वकी निहात है तो फिर उसे विषय विकारादिकमें फँस क्या व्यर्थहीमें गुमाना चाहिये । इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

प्राचीन समयानुसार आजकल सनातनी श्रमणों [साधु] का दर्शन नहीं होता ठीक वैसे ही

सनातना श्रावन भी कहाँ मिलते है ? इस बार
कभी साचा भी है !

तप जप धम ध्यानादि क्रियाकांड तो बहु
किए, लेकिन मनके मैलको हटानेका कितना प्रय
त्न किया ? इस बारमे कभी सोचा भी है !

निमक हृदयमें हमेशा धम बसा रहता है उस
का दुगण भी वदन करते हैं ? तो धम कितना
श्रेष्ठ है। इस बारमे कभी सोचा भी है ?

दुनियाके अन्य कम व कार्य संपन्न करते
समय तू अपने मनको स्थिर दृढ रखता है, तो
फिर धर्मकार्योंमें उसे क्यों निर्बल बनाता है ?
इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

ये औदारी अधता [अधश्रद्धा] जीवनका
कितना नुकसान नहीं करती है उसमें कभी ज्यादा

अज्ञानकी अधता [अवद्दात्ति] नुकसान करता है ? इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

विषय लिप्सामें आनन्द तो स्वयंको प्राप्त होता है लेकिन उसका दुष्परिणाम कितना होता है ? इस बारेमें कभी सोचा भी है ?

तेरे पुत्र पौत्र प्रपौत्रादि भरपेट भोजन करें तथा आरामसे रह सकें इतनी अतुल सम्पत्ति तू इकट्ठी कर रहा है, लेकिन जन्म मरणकी बेडीके बंधन कितने तो मजबूत हो रहे हैं,इसका स्वप्नमें भी कभी विचार किया है ?

अगर नहीं किया हो तो आजसे ही करने लगो।

महिमा कहानी

(सुनो सुना हे दुनियावालों — पाबू)

सुनो सुना प्रधान शिष्य औ गुरु महिमाकी धर्म कहान
सत्य प्रेम औ दया दानका नित बढ़ाते ये पा
सुना सुनो प्रधान शिष्य

गुर्जर देशके शहर सुरतमें मातीचन्दन जन्म लि
शेठ जयचंद औ माँ जमवतीकी, गोदको जिसने पवित्र कि
पाया शेठने पुत्र एक किन्तु शासनको मितारा। मि
जमवतीकी गोद भरी औ ओसवाल कुलमें दीप ज
उन्नीससौ पासठ सालका माह भाद्रपद सबको मा
वदी द्वादशी रुकर जन्म र, सबको जिसने दरसा
सभी मिल श्रद्धामय बन हम उनको शीश झुकाते
अेक स्वरमें जयघोष कर गीत उन्हींके गाते
सुनो सुना प्रधान शि

[२]

किशार अवस्था छोड गुरूने यौवनागन में प्रवेश किय
धम ध्यान मय बनकर मन मात पिताका खुश किय
उन्नीस वर्षकी कामल वयम, सुना रविसूरिक
नाम वह

आत्म ध्यानमें हुआ लीन वह,उत्तर फिर सत्त्व रहा
वैराग्य रगमें रगा दिवाना आ प्रवीण चरणम रहा रहा
दीक्षा मार्गी बन सुख वशाशन्ना,उठपीश वह अडा रहा
माया-माह सब दूर हुअे, औ घरकी ममता छुट पडी
पूणश्वरम दीक्षा पाकर, गूँथा सुमन प्रेम लडी
यह महान् पद मिला,न जिनका दुनियामें कोआ साना
सुना मना प्रनाण शिष्य औ माहिमा गुरूका परम कहानी

[३]

सूर्यपुरसे निकल गुरुजीने, अकलेश्वरमें प्रवेश किया
जष्ट सुदकी शुभ दशमाको, वहाँ दीक्षाका उत्सव किया
हर्षित हाकर सूरिजीने तुमरा,माहिमाविजयजी नाम दिया
औ पुलकित हो गुरु प्रवीणने,अपना तुम्हे शिष्य किया
पचमहाव्रतधारी गुरुजी, बाल - ब्रह्मचारी कहलाये
नास्तिकने भी आस्तिक बनके, माहिमा गुरूके ...

सुरत कपडवन खभातवा गुरुवरका वाणा भाशा
अहमन्नगर सगमनेर तलेगाँवने गुरुवरकी माहिमा गाओ
आदि२ नगरान चौमासेम आत्मफमलकी र्ग ध जानो
सुनो सुनो प्रवीण शिष्य औ माहिमा गुरुका धरम कहानी

[४]

पचीस वर्षस नगर डगरमें, अमृतवाणी तुम बरसाते।
माहिमा गुरु गुरुभाई तुम्हारे,सुशील पूना उर नित भाते
महाभाग्य तुम महान् आत्मा,प्रवीण शिष्य ओ कहलाये,
लब्धिसुरिकी शुभ निश्रामें, धर्मज्योति नित प्रगटाये
ललित भ्रदर्मको भक्ति देके मुक्ति मार्ग सूने बतलाया
' रजनको ' भी धर्म हेम दो चरणमें तेरे वह आया
पा आशिष गुरुवर तेरी नित 'दीप कमल'दिल लहराय
सुनो सुनो प्रवीण शिष्य औ माहिमा गुरुकी धरमकहानी

जैन धर्मके विषयमें

जगविख्यात विचारकोंकी सम्मतियाँ



प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू
[डिसकव्हरी ऑफ इंडिया]

हिंदू संस्कृति भारतीय संस्कृतिका ही एक अंश है। जैन या बुद्ध पूर्ण नामसे भारतीय हैं लेकिन वे हिंदू नहीं हैं।

स्व. लोकमान्य तिलक

महावीर स्वामीजीने जैनधर्मका पुनर्जीवन किया। वे २४ वें अवतार थे। इस अवतारके पहले भी जैन धर्म प्रचारमें था। इस बातसे जैन धर्मकी प्राचीनता सिद्ध होती है।

जी जे आर फरलॉंग

जैन धर्मकी स्थापना, शुरुवात कब हुआ इसका पता लगाना असंभव है। हिंदुस्थानके धर्मोंमें जैन धर्म सबसे प्राचीन है

डॉ. हर्मन याकोबी एम्. एम्. पी. एच्. डी.

जैनधर्म पूरे तौरसे स्वतंत्र धर्म है। इस धर्मने दूसरे किसी धर्मका अनुकरण या नकल नहीं की है।

डॉ. सतीशचंद्र प्रिंसिपॉल संस्कृत कॉलेज, कलकत्ता

वेदांत दर्शनके पहले ही जैनधर्म प्रचारमें था, इसके बारेमें मेरे मनमें तनिक भी शक नहीं है। सृष्टिके आरंभसे ही जैनधर्म प्रचारमें है। जैनधर्म और सृष्टि इनकी शुरुवात एक साथ ही हुआ है।

प्रो. मैक्समुल्लर—मोक्षमूलर

जैनधर्म हिंदूधर्मसे बिल्कुल भिन्न और स्वतंत्र धर्म है।

डॉ राजेंद्रप्रसाद राष्ट्रपति

श्री महावीरजीके उपदेशके अनुसार चलनेसे शांति प्राप्त हो सकेगी । अिस महापुरुषने बताये मार्गपर चलनेसे हम पूर्ण शांति प्राप्त कर सकेंगे । आजके भयपमय और अशांत संसारमें अिस साधु पुरुषके उपदेशके अनुसार चलनेसे शांति प्राप्त हो सकेगी ।

सर अकबर हैदरी

भू पू राज्यपाल, आसाम प्रदेश

महावीरका सत् संदेश हमारे हृदयमें विश्व बंधुत्वका शंखनाद करता है ।

श्री ग वा मानळणकर

अध्यक्ष, भारतीय संसद

अहिंसा, दया और प्रेमके आधार पर एक विश्वधर्मकी स्थापना करना– जैनधर्म प्रवर्तक महावीरका उद्देश था ।

स्व कविसम्राट रवींद्रनाथ टागोर

धर्म यानी सामाजिक रूढी नहीं – ऐसी आवाज महावीरने भारतके कोने कोनेमें बुलन्द की । धर्म यानी सत्य । मानवधर्म व धर्म कर्ममें स्थूल रूपसे परंपरागत ऐसी किसी भी प्रकारकी विभिन्नता नहीं ।

इंपिरियल गुयाशटियर ऑफ इंडिया [पृष्ठ ५४]

बौद्ध धर्म संस्थापक गौतम बुद्धके पहले जैन धर्म अन्य २३ तीर्थंकर हो गये थे।

डॉ. डब्ल्यू राईस डेव्हिड

जैनधर्म यह बौद्ध धर्मसे अवश्य ही प्राचीन है, इसमें कोई संदेह नहीं।

डॉ. राधाकृष्ण, उपराष्ट्रपति
[भारतीय संघ राज्य]

अदन पूर्व हो गये २३ महर्षि अथवा तीर्थंकरों द्वारा जैन धर्म का पूर्व मानन आता था। पुरातनसे चले आये सिद्धांतोंके वे प्रवर्तक व प्रसारक थे। वे किसी भी नूतन विचार प्रणाली संप्रदाय अथवा उसके संस्थापक न थे। इसवी सन् के पूर्व ऋषभदेवके असंख्य उपासक थे। इस तत्वको सिद्ध करते अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं। खास यजुर्वेद में भी तीर्थंकरोंकी मान्यता मानी गयी है।

प्रा हरिसत्य भट्टाचार्य

जैन संस्कृति यह माननीय संस्कृति है। जैन-दर्शन दैवी दर्शन है, 'जिन' ये जन्मसे ही देव न थे। वे अपनी स्वकृतत्वशक्तिसे 'जिन' देव हुए।

कर्नल टॉड

भारतवर्षके प्राचीन इतिहासमें जैन धर्मने अपना नाम अजरामर रखा है।

प रामभिश्रजी आचार्य, रामानुज सम्प्रदाय

स्याद्वाद यह जैनधर्मका अभेद्य दुर्ग है। इस दुर्गमें वादी और प्रतिवादीके मायामय गोलोंका प्रवेश नहीं होता। वेदांत आदि अन्य दर्शन शास्त्रोंके पूर्व भी जैनधर्म अस्तित्वमें था, इस बारेमें मुझे रतीभर भी सन्देह नहीं।

डॉ ए गिरनॉट, फ्राम

जैनधर्मद्वारा प्रतिपादित चारित्र्य मानव जीव तथा उन्नतिकी नियम बहुतही आश्चर्यकर व

हितकारी है। यह धर्म अनेक प्रकारसे साधा सादा, स्वतन्त्र और मौल्यवान धर्म है। प्रचलित ब्राह्मण धर्मसे यह धर्म सर्वथा भिन्न है। ठीक उसी तरह बौद्ध धर्मानुसार यह धर्म नास्तिक भी नहीं।

डॉ जॉन्स हर्टल, जर्मनी

जैनधर्म तथा जैनाचार्योंके उपदेशमें [illegible] नियम व उच्चविचार कूट कूटके भरे पड़े हैं। यह मैं अपने देशबंधुओंको दिखा रहा हूँ। बौद्धधर्मीय साहित्यक धानस्वत जैन धर्मीय साहित्य [illegible] दर्जेका है। जैनधर्म तथा जैन साहित्य [illegible] ज्यों ज्यों मेरी जानकारी बढ़ती गयी त्यों त्यों मेरे हृदयमें उसके प्रति आदर [illegible] बढ़ रहा है।

सरदार वल्लभभाई पटेल

[भू पू गृहमंत्री, [illegible]]

जैनोंकी आद्य संपत्ति [illegible] अहिंसा है यहाँ [illegible] [illegible] यह पाप [illegible] [illegible] [illegible], अहिंसा [illegible] [illegible] माननेवाले जैनियोंका [illegible]

—'[illegible]'

श्री परमारकी अन्य रचनायें

स्वपन संग्रह

१ ज्योतिपुंज	२ आने
२ श्मशान	२॥ ,,
३ श्रद्धांजलि	५ ,,
४ कल्पना	८

अनुवादित साहित्य

५ आत्मकथा—(ले पू आचार्यश्री जयसूरीश्वरजी)
६ प्रार्थना—(ले पू पन्यासश्री भद्रंकर विजयजी)
७ दीप तपस्वी महावीर—(ले प मुनिलालजी)
८ रत्न प्रयाण—(ले साने गुरुजी)
९ सम्राट अशोक— श्री गंगाधर म ...)

मौलिक अप्रकाशित

१० जयप्रकाश — जीवन चरित्र
११ बच्चोंके सरदार — ,, काव्यमें
१२ रत्न मंजूषा — नाटिका
१३ आनका समाज — नाटिका
१४ अमला — (लेखक—कु कमला पॉल व रतन परमार)

प्राप्तिस्थान

श्री भभूतमल तिलोकचंद जैन
३११ रविवार पेठ, पूना २